लक्ष्य

ई-पत्रिका/अप्रैल - 2021

तीसरा अंक

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम) आई एस ओ 9001-2015 प्रमाणित कम्पनी

चण्डीगढ़ क्षेत्रीय कार्यालय

एस सी ओ 132-133, पहला व दूसरा तल,

सेक्टर 34-ए, चंडीगढ़ - 160022

हडको

हडको द्वारा अब तक का उच्च लाभांश भुगतान

आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय के माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री एच.एस पुरी को हडको के निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग) श्री एम नागराज ने वर्ष 2019-20 के लिए 428.68 करोड़ रुपये राशि का अंतिम लाभांश चेक दिया। इस अवसर पर श्री डी एस मिश्रा, सचिव, आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय, श्री डी गुहन, निदेशक(वित्त) तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। अपने स्वर्ण जयंती वर्ष में हडको ने वर्ष 2019-20 के लिए 620.59 करोड़ रुपये राशि का 31% उच्च लाभांश भुगतान किया है। साथ ही हडको ने ग्रामीण विकास मंत्रालय को 128.65 करोड़ रुपये राशि तथा सामान्य शेयरधारकों को 63.26 करोड़ रुपये राशि का लाभांश भुगतान किया।

हडको तथा आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

हडको ने आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय के साथ वितीय वर्ष 2020-21 के लिए मुख्य लक्ष्य स्थापित करने हेतु एक समझौता ज्ञापन(एमओयू) पर हस्ताक्षर किए । इस समझौता ज्ञापन पर श्री दुर्गा शंकर मिश्रा, सचिव, आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय तथा श्री कामरान रिज़वी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, हडको के बीच श्री एम नागराज, निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग) तथा श्री डी.गुहन निदेशक (वित्त) की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए ।

2019-2020 में हडको के बेहतरीन वित्तीय परिणाम

हडको ने 2019-20 में अपने स्वर्ण जयंती वर्ष में 45% के शुद्ध लाभ के साथ बेहतरीन वित्तीय परिणाम हासिल किए हैं और 2018-19 में कमाए गए 1180.15 करोड़ रु. की तुलना में 2019-2020 में अब तक सर्वाधिक रु.1708.42 करोड़ का शुद्ध लाभ कमाया। हडको के शुद्ध कारोबार में भी 13% की वृद्धि प्राप्त हुई है और यह 2018-19 में रु.10955.77 करोड़ की तुलना में 2019-2020 में रु.12343.49 करोड़ रहा। शुद्ध कुल आय में 2018-19 में रु.5591.22 करोड़ की तुलना में, 2019-2020 में रु.7571.64 करोड़ के साथ 35% की उल्लेखनीय वृद्धि हुई । हडको के निदेशक मंडल ने, शेयरधारकों के अनुमोदन की शर्त पर, प्रति शेयर रु.3.10 के अब तक के अधिकतम लाभांश को भी स्वीकृति दी है। इस लाभांश में मार्च, 2020 में पहले से अदा किया जा चुका प्रति शेयर रु 0.75. का अंतरिम लाभांश शामिल है ।

इसके अतिरिक्त, हडको का शुद्ध एनपीए 0.19 % है तथा यह इस क्षेत्र का सबसे कम एनपीए है । वर्ष 2019-2020 के दौरान, हडको ने आवासीय- प्रधान मंत्री आवास योजना (शहरी), एक्सप्रेसवे एवं जलापूर्ति से संबंधित परियोजनाओं को मंजूरीदेने पर जोर दिया है ।

लक्ष्य

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या	विषय
1-7	संदेश	27	पासिंग आउट परेड
8	राजभाषा पखवाड़ा	28	सूत्र नेति के लाभ और विधि
9	राजभाषा ऑनलाइन बैठक	29	स्वस्थ जीवन शैली एवं योग
10	सतर्कता जागरूकता सप्ताह	30-32	गौरैया चिड़िया
11-12	खेल दिवस	33	एक संत के विचार
13	व्यावसायिक गतिविधियों की झलक	34	एक प्रेरणा दायक कहानी
14-15	हडको की विभिन्न वित्तपोषितपरियोजनाएं	35	कोरोना से जंग
16	हडको सी.एस.आर. सहायता	36	दृष्टिकोण
17	क्रेडिटलिंक्डसब्सिडी योजना	37	कभी हंस भी लिया करो
18	बेस्टप्रैक्टिसेजअवार्ड	38-39	रमणीय गोवा
25	श्री गुरु तेग बहादुर जी	40-42	मेरी मसरूर यात्रा
26	हिरणी की प्रार्थना	43-44	बच्चों की कलम से

मुख्य संपादक :

श्रीमती हरजोत कौर, सयुंक्त महाप्रबंधक (परि०)

सह संपादक :

श्रीमती कंवलजीत कौर, वरिष्ठ प्रबंधक (आर० ओ०),

श्रीमती नीलम मागो, प्रबंधक (सचिव)/नोडल अधिकारी (रा०भा०)

परिकल्पना एवं साज-सज्जा :

कुमारी भावना, प्रबंधक (सचिव)

कॉर्पोरेट लक्ष्य एवं उद्देश्य

लक्ष्य

लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए
संभावित पर्यावास विकास की प्रोन्नति करने वाली
अग्रणी तकनीकी वित्तीय संस्था बनना

उद्देश्य

जीवन की गुणवत्ता को बढाने हेतु
संभावित पर्यावास विकास की प्रोन्नति

क्षेत्रीय कार्यालय चण्डीगढ में हिन्दी पत्राचार की वार्षिक स्थिति पर एक नज़र
(जनवरी, 2020 से दिसम्बर, 2020) तक की तिमाही की प्रगति रिपोर्ट का ब्यौरा

तिमाही ब्योरा	01.01.20 से 31.03.20	01.04.20 से 30.06.20	01.07.2020 से 30.09.2020	01.10.2020 से 31.12.2020
भेजे गए कुल पत्र	796	331	536	489
अंग्रेजी में भेजे गए पत्र	48	23	31	26
हिन्दी में भेजे गए पत्र	748	308	505	515
प्रतिशतता (%)	**93.97%**	**93.05%**	**94.22%**	**94.95%**

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ द्वारा हिंदी गृह पत्रिका "लक्ष्य" के अगले अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी गृह पत्रिकाएँ न केवल पाठकों एव रचनाकारों के बीच एक संपर्क का कार्य करती हैं बल्कि अंतर कार्यालयी संपर्क को भी बढ़ाती हैं। साथ ही यह भी एहसास दिलाती हैं कि राजभाषा का प्रयोग सरल है।

गृह पत्रिकाएँ सदैव ही कार्मिकों के रचनात्मक पहलू को जागृत करती हैं और पाठकों को राजभाषा के प्रयोग की प्रेरणा देती हैं। "लक्ष्य" पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए चंडीगढ़ क्षेत्रीय कार्यालय एवं संपादक मण्डल को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

मैं "लक्ष्य" के निरंतर प्रकाशन की कामना करता हूँ।

Kamran
19/3

कामरान रिज़वी
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वाह करते हुए कार्यालय की राजभाषा गृह पत्रिका "लक्ष्य" के अगले अंक का प्रकाशन कर रहा है। सरकारी कामकाज में राजभाषा के इस प्रकार के अनूठे प्रयोग से यह हिन्दी गृह पत्रिका बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। राजभाषा को समुन्नत बनाने की दिशा में हिन्दी पत्रिका "लक्ष्य" के प्रकाशन के लिए चंडीगढ़ क्षेत्रीय कार्यालय, हडको बधाई का पात्र है।

मैं हिन्दी गृह पत्रिका के कलेवर व कथ्य सामग्री के लिए पत्रिका के संपादन मंडल की ओर से किए गए श्रमसाध्य प्रयासों की भी सराहना करता हूँ। निश्चित रूप से क्षेत्रीय कार्यालय का यह प्रयास राजभाषा के प्रचार-प्रसार में हडको को गौरवान्वित करेगा।

एम.नागराज
निदेशक कॉर्पोरेट प्लानिंग

संदेश

मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ अपनी गृह पत्रिका "लक्ष्य" के अगले अंक का प्रकाशन कर रहा है जो कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का एक मानकीय माध्यम है। मुझे बहुत खुशी है कि इस पत्रिका की पठन-पाठन सामग्री का चयन विशेषतः हर वर्ग के लिए किया गया है जोकि सराहनीय प्रयास है। आशा है कि यह अंक कार्यालय में राजभाषा के सरल रूप एवं भाषाई सौहार्द की स्थापना करने में सफल सिद्ध होगा।

मैं चंडीगढ़ क्षेत्रीय कार्यालय के प्रेरणादायक प्रयास का हार्दिक स्वागत करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि यह गृह पत्रिका सफलता के नए आयाम स्थापित करेगी।

डी गुहन
निदेशक (वित्त)

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हडको चंडीगढ़ क्षेत्रीय कार्यालय की गृह पत्रिका "लक्ष्य" का अगला अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हुआ है। विचारों की संवाहिका के साथ ही भावनाओं की अभिव्यक्ति का गुण भी एक सुदृढ़ भाषा में निहित होता है। मेरा विश्वास है की यह अंक राजभाषा के व्यावहारिक पक्ष की नींव को मजबूत करने में सफल सिद्ध होगा। हम सभी सौभाग्यशाली हैं कि चंडीगढ़ क्षेत्रीय कार्यालय की इस पत्रिका में हडको की कार्यप्रणाली, उद्देश्य, अनुभव एवं रचनात्मकता को समाहित किया गया है।

मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में इसी प्रकार राजभाषा प्रचार-प्रसार में प्रगति सुनिश्चित होगी।

अजय मिश्रा

अजय मिश्रा
प्रमुख सतर्कता अधिकारी

संदेश

मुझे यह जानकर असीम प्रसन्नता हुई है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं उन्नयन की दृष्टि से अपनी हिन्दी गृह पत्रिका "लक्ष्य" के अगले अंक का प्रकाशन कर रहा है। मुझे विश्वास है कि "लक्ष्य" पत्रिका का यह अंक भी राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन को और आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा। हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं सृजनात्मकता की दृष्टि से चंडीगढ़ क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कार्मिक इस कार्य के लिए बधाई के पात्र हैं।

आशा करती हूँ कि चंडीगढ़ क्षेत्रीय कार्यालय भविष्य में भी राजभाषा हिन्दी की प्रगति की दिशा में इस प्रकार सकारात्मक प्रयासों के लिए सदैव तत्पर रहेगा।

शुभकामनाओं सहित।

उपिन्दर कौर
महाप्रबंधक (राजभाषा)

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वाह करते हुए कार्यालय की राजभाषा गृह पत्रिका "लक्ष्य" के अगले अंक का प्रकाशन कर रहा है।

जैसा कि विदित है कि हमारे समाज के वंचित वर्गों की बिगडती आवास स्थितियों के सुधार के लिए भारत सरकार द्वारा 25 अप्रैल 1970 को हडको की स्थापना की गई थी। हडको ने तब से एक लंबा सफर तय किया है और अब भी एक अग्रणी राष्ट्रीय तकनीकी वित्त पोषण संस्थान के रूप में स्थापित है। पिछले 50 वर्षों में हडको ने बाजार की स्थितियों, सरकार की नीतियों आदि के बदलाव की कई चुनौतियों का अपनी मजबूत नीतियों और प्रथाओं के साथ सामना किया। हडको ने राष्ट्र निर्माण के लिए बडे स्तर पर मदद की है। "सामाजिक न्याय के साथ लाभप्रदता" हडको का आदर्श वाक्य है।

चंडीगढ़ क्षेत्रीय कार्यालय पंजाब, हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ की योजनाओ को क्रियान्वयन करता है। अभी तक इन राज्यों में हडको द्वारा रू 10468 करोड़ ऋण की 1167 योजनाएँ वित्त पोषित की जा चुकीं हैं जिनमे रू 7004 करोड़ कीऋण अव्मुक्ति की जा चुकी है। इसके अतिरिक्त भारत सरकार की विभिन्न योजनाओ में भी हडको ने इन राज्यों को सहयोग दिया है।

"लक्ष्य" पत्रिका की पठन-पाठन सामग्री विशेषतः हर वर्ग के लिए चयनित की गई है जोकि एक सराहनीय प्रयास है। इस पत्रिका में हडको की कार्यप्रणाली, उदेश्य, अनुभव व रचनात्मकता को भी समाहित किया गया है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी सफलता के नए आयाम स्थापित करेगा।

आकाश त्यागी

क्षेत्रीय प्रमुख

संदेश

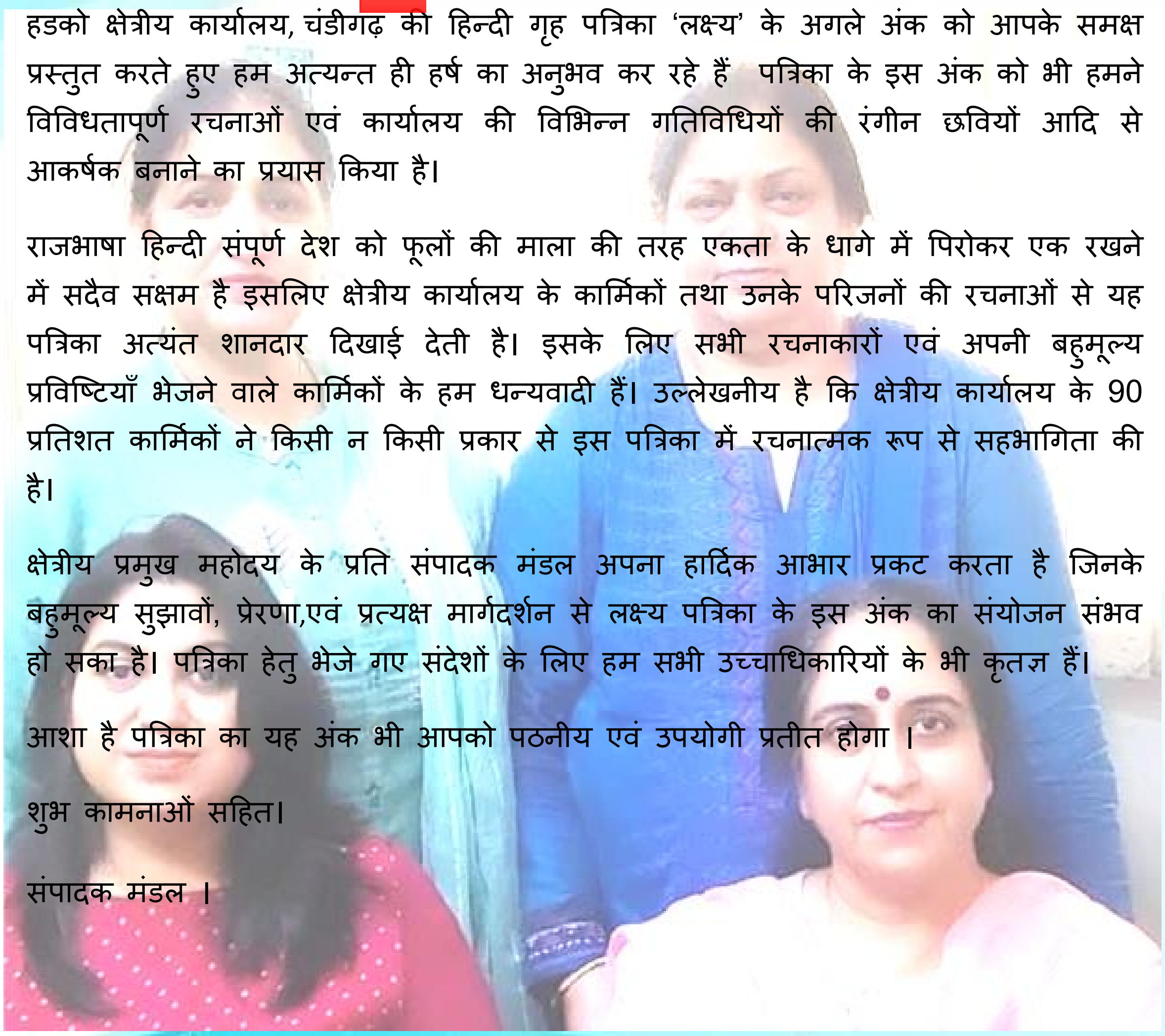

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ की हिन्दी गृह पत्रिका 'लक्ष्य' के अगले अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हम अत्यन्त ही हर्ष का अनुभव कर रहे हैं पत्रिका के इस अंक को भी हमने विविधतापूर्ण रचनाओं एवं कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों की रंगीन छवियों आदि से आकर्षक बनाने का प्रयास किया है।

राजभाषा हिन्दी संपूर्ण देश को फूलों की माला की तरह एकता के धागे में पिरोकर एक रखने में सदैव सक्षम है इसलिए क्षेत्रीय कार्यालय के कार्मिकों तथा उनके परिजनों की रचनाओं से यह पत्रिका अत्यंत शानदार दिखाई देती है। इसके लिए सभी रचनाकारों एवं अपनी बहुमूल्य प्रविष्टियाँ भेजने वाले कार्मिकों के हम धन्यवादी हैं। उल्लेखनीय है कि क्षेत्रीय कार्यालय के 90 प्रतिशत कार्मिकों ने किसी न किसी प्रकार से इस पत्रिका में रचनात्मक रूप से सहभागिता की है।

क्षेत्रीय प्रमुख महोदय के प्रति संपादक मंडल अपना हार्दिक आभार प्रकट करता है जिनके बहुमूल्य सुझावों, प्रेरणा,एवं प्रत्यक्ष मार्गदर्शन से लक्ष्य पत्रिका के इस अंक का संयोजन संभव हो सका है। पत्रिका हेतु भेजे गए संदेशों के लिए हम सभी उच्चाधिकारियों के भी कृतज्ञ हैं।

आशा है पत्रिका का यह अंक भी आपको पठनीय एवं उपयोगी प्रतीत होगा ।

शुभ कामनाओं सहित।

संपादक मंडल ।

हरजोत कौर
सयुंक्त महाप्रबंधक (परि0)
मुख्य संपादक

कंवलजीत कौर
वरिष्ठ प्रबंधक (आर०ओ०)
सह संपादक

नीलम मागो
प्रबंधक (सचिव)
सह संपादक

भावना
प्रबंधक (सचिव)
परिकल्पना एवं साजसज्जा

राजभाषा पखवाड़ा दिनांक 07.09.2020 से 21.09.2020

हडको क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ में 07 से 21 सितम्बर 2020 के दौरान हिन्दी पखवाड़ा तथा हिंदी दिवस मनाया गया। हिन्दी पखवाड़े का शुभारंभ दिनांक 07.09.2020 को किया गया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान वर्तमान (कोविड -19) स्थिति एवमुख्यालय से प्राप्त निर्देशों के क्रम में क्षेत्रीय प्रमुख महोदय के अनुमोदन से ऑनलाइन प्रतियोगिताएँ क्रमशः“निबंध लेखन”तथा“हिंदी ज्ञान”आयोजित की गयी तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक तथा सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए कार्यशाला का आयोजन भी किया गया जिसमे सभी ने बढचढ कर भाग लिया।

निबंध लेखन प्रतियोगिता - ऑन-लाइन मेंश्री श्रीजीत के० यू०, उप प्रबंधक(परि०), प्रथम, श्री गौरव शर्मा, उप प्रबंधक (प्रशा०) द्वितीय,श्री संजीव कुमार, उप प्रबंधक(आईटी) तृतीय तथा श्री केसर सिंह, वरिष्ठ ड्राईवर को प्रोत्साहन पुरूस्कार दिए गए। *हिंदी-ज्ञान प्रतियोगिता- ऑन-लाइन* मेंकु० भावना, प्रबंधक -(सचि०) प्रथम, श्री राजीव गर्ग, संयुक्त महाप्रबंधक(परि०) द्वितीय, श्री रमेश कुमार, प्रबंधक (वित्त०),तृतीय तथा श्री हरविंदर पाल सिंह, उप प्रबंधक (आईटी) को प्रोत्साहन पुरूस्कार दिए गए।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान दिनांक 14.09.2020 को हिंदी दिवस का आयोजन तथा कार्यान्वयन समिति की बैठक की गयी तथा सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। दिनांक 21.9.2020 को सफल प्रतियोगियों को क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए। इस दौरान क्षेत्रीय प्रमुख महोदय जी ने कार्यालय में सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को हिन्दी मे अधिक से अधिक कार्य करने के लिये बधाई दी तथा आगे भी हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया ।

नीलम मागो

प्रबंधक (सचिव)/हिन्दी नोडल अधिकारी

राजभाषा ऑनलाइन बैठक

क्षेत्रीय प्रमुख श्री आकाश त्यागीकी अध्यक्षता में चंडीगढ़ क्षेत्रीय कार्यालय की दिसम्बर 2020 को समाप्त तिमाही की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पहली ऑनलाइन बैठक, कार्यशाला/निरीक्षण का आयोजन दिनांक 16.12.2020 को https://meet.google.com/pgy-kidc-end लिंक पर किया गया जिसमें समिति के सभी सदस्यों ने वीडियोकॉन्फ्रेंसिंग (ऑनलाइन- गूगल मीट) के जरिये जुड़कर बैठक / कार्यशाला में भाग लिया। इसमें मुख्यालय राजभाषा अनुभाग सेश्री नरेंद्र, सहा० महाप्रबंधक (रा०भा०) तथा श्रीमती रेखा, प्रबंधक (रा०भा०) ने भी ऑनलाइन जुड़कर हमारा मनोबल बढाया तथा मार्गदर्शन किया।

श्री नरेन्द्र ने अध्यक्ष महोदय की अनुमति से सभी सदस्यों को संबोधित किया तथा राजभाषा कार्य में सभी के सहयोग को सराहा। उन्होंने तिमाही प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा सबके सामने रखी तथा उनमें पाई गयी कमियों / त्रुटियों को सुधारने का भी सुझाव दिया ताकि आने वाली संसदीय समिति की जाँच/ निरीक्षण में कोई कमी न आ पाए।

श्री नरेन्द्र द्वारा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम की जानकारी एवम निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु सहयोग तथा सतत प्रयासरत रहने तथा अध्यक्ष एवम प्रबंध निदेशक महोदय की ओर से जारी राजभाषा हिंदी के प्रयोग से सम्बंधित विभिन्न जाँच- बिन्दुओं के दृढ़ता से अनुपालन पर जोर दिया। उन्होंने हडको इंट्रानेट पर उपलब्ध हडको राजभाषा विभाग द्वारा जारी की गयी नवीन "उत्कर्ष योजना" - (जिसमें 17 योजनाये शामिल है) पर विस्तार पूर्वक चर्चा की तथा सभी से उन विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता करने तथा अपनी प्रविष्टियां /रिकॉर्डमुख्यालय भेजने हेतु कहा ताकि सबको प्रोत्साहन/ इनाम मिल सके साथ ही राजभाषा कार्य को बढ़ावा मिल सके।

चंडीगढ़ क्षेत्रीय कार्यालय की आंतरिक हिंदी गृह-पत्रिका के प्रकाशन पर भी ध्यान आकर्षित किया गया तथा गृह- पत्रिका "लक्ष्य" के पुनः प्रकाशन के लिए कहा गया। इस प्रकार वीडियोकॉन्फ्रेंसिंग (ऑनलाइन- गूगल मीट) के जरिये जुड़कर बैठक / कार्यशाला में भाग लेना एक नया प्रयास तथा सफल अनुभव रहा।

राजभाषा हिंदी विभाग, चंडीगढ़

क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ में सतर्कता जागरूकता सप्ताह

हडको क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ में दिनांक 27.10.2020 से 02.11.2020 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया तथा इस दौरान 27.10.2020 को कार्यालय में सबसे पहले राष्ट्रपति जी तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी के संदेश पढकर सुनाए गये इसके बाद सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा दिलवाई गई। चंडीगढ़ कार्यालय के स्टाफ सदस्यों को सीवीसी साइट पर उपलब्ध ई.प्रतिज्ञा के बारे में भी सूचित किया गया और वहां भी उन्हें अपनी प्रतिज्ञा दर्ज करने की सलाह दी गई।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान कार्यालय में सतर्कता सप्ताह के थीम “Vigilant India, Prosperous India” सतर्क भारत, समृद्ध भारत विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 28.10.2020 को किया गया जिसमें कुल 6 स्टाफ सदस्यों ने हिस्सा लिया और दिनांक 29.10.2020 को थीम “Preventive Vigilance”“निवारक सतर्कता” विषय पर स्लोगन लेखन प्रतियोगिता की गयी जिसमें कुल 9 स्टाफ सदस्यों ने हिस्सा लिया।

प्रतियोगिता	निबंध लेखन प्रतियोगिता	स्लोगन लेखन प्रतियोगिता
प्रथमपुरस्कार	श्री श्रीजिथ के.यू., उप प्र० (परि०)	श्री राजीव गर्ग, संयु०महाप्रबंधक (परि०)
द्वितीयपुरस्कार	सुश्री भावना, प्रबंधक (सचि०)	श्री अरविंदर कुमार शर्मा, प्रबंधक (सचि०)
तृतीयपुरस्कार	श्री एच पी एस कैंथ, उप प्र० (आईटी)	सुश्री भावना, प्रबंधक (सचि०)
सांत्वना पुरस्कार	श्री अब्बल चंद, ए.एफ(एसजी) श्री रमन कुमार, प्रबंधक (सचि०)	श्री संजीव कुमार, उप प्र० (आईटी) श्रीमती मनमीत कौर, सहा० प्र०(वित्त) श्री महेश शर्मा, सहा० प्र० (आईटी)

दिनांक 02.11.2020 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह के समापन समारोह के अवसर पर सतर्कता विषय पर क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा कार्यालय के स्टाफ सदस्यों के साथ विस्तृत चर्चा की गई एवं उपरोक्तसफल प्रतिभागियों को क्षेत्रीय प्रमुख महोदय द्वारा पुरस्कार वितरित किये गये।

सतर्कता विभाग, चण्डीगढ़

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ में खेल दिवस का आयोजन

खेलकूद का मनुष्य जीवन के व्यक्तिगत विकास से महत्वपूर्ण संबंध है । हडको एक ऐसा संस्थान है, जहां सभी कार्मिको के व्यक्तिगत तथा पेशेवर विकास हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है । वर्ष 2020 को हडको के गोल्डनजुबली वर्ष के रूप में मनाया गया । इस के अंतर्गत हडको के सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में हडको खेल दिवस 2020 का आयोजन किया गया । इसी संदर्भ में हडको क्षेत्रीय कार्यालय चण्डीगढ द्वारा दिनांक 01.02.2020 को मोहाली गोल्फ रेंज में खेल दिवस का आयोजन किया गया था । खेल दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य खेलों के बारे में जागरूकता पैदा करना है।

इस आयोजन के दौरान सर्वप्रथम श्री आकाश त्यागी, क्षेत्रीय प्रमुख महोदय चण्डीगढ द्वारा सभी कार्मिको एवं परिवार के सदस्यों का इस अवसर पर स्वागत एवं संबोधन किया गया। उन्होंने कहा कि दैनिक दिनचर्या में खेल की बहुत ही महत्वता है जोकि सभी के लिए अति आवश्यक है ताकि वो शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहें।

कार्यालय कार्मिकों तथा उनके परिवार के सदस्यों ने बडे ही उत्साह के साथ खेल-कूद दिवस में सक्रियता से भाग लिया तथा कार्यक्रम को अति रोमांचक बनाया । संयोजक द्वारा खेल-कूद में बचपन के खेलों को भी प्रतिभागिता के लिए शामिल किया गया, जिस कारण सभी ने अपने

बचपन को याद कर उनमे भाग लिया । सभी कार्मिकों तथा उनके पारिवारिक सदस्यों द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे कि दौड(पुरूषों, महिलाएं), क्रिकेट, तीन टांग की दौड, लैमनस्पूनदौड, बैडमिंटन, गोल्फ एवं म्यूजिकलचेयर,तम्बोला आदि में भाग लिया गया । कार्यक्रम के अंत में क्षेत्रीय प्रमुख महोदय द्वारा प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किये गये ।

कंवलजीतकौर

वरिष्ठप्रबंधक(आरओ)

खेल दिवस की कुछ झलकियाँ

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ की व्यावसायिक गतिविधियों की झलक

(दिनांक28.02.2021कीसंचयीस्थिति)

(राशि करोड़ में)

विवरण	योजनायें			ऋणस्वीकृत			ऋणअवमुक्ति		
	हाउसिंग	यु-आई	कुल	हाउसिंग	यु-आई	कुल	हाउसिंग	यु-आई	कुल
पंजाब	329	209	538	2881	1583	4464	1639	929	2568
हरियाणा	274	92	366	1088	3522	4610	415	2820	3235
हिमाचल प्रदेश	160	27	187	336	887	1223	328	872	1200
चंडीगढ़	75	1	76	171	-	171	171	-	171
कुल	838	329	1167	4476	5992	10468	2553	4621	7004

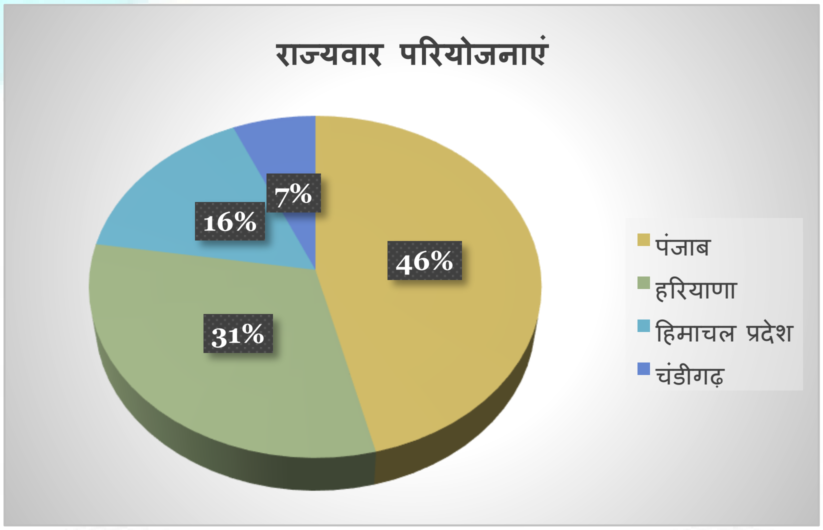

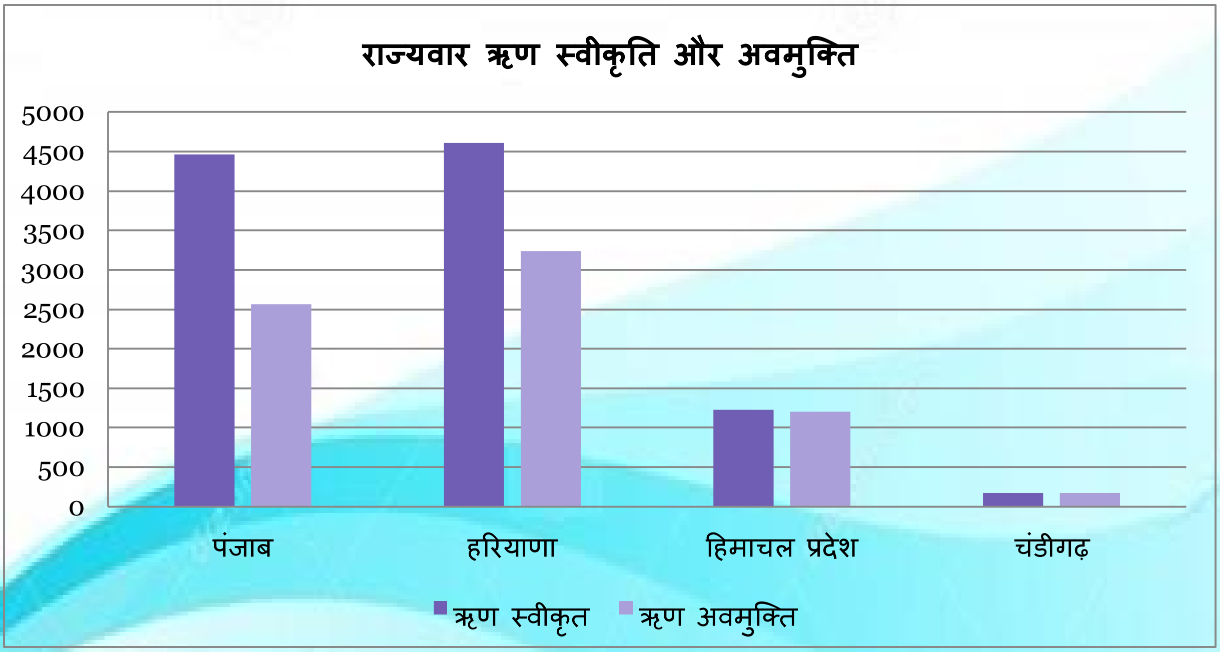

योजना का नाम: हरियाणा में विभिन्न स्थानों पर पुलिस क्वार्टरों का निर्माण।

एजेंसी का नाम: हरियाणा पुलिस हाउसिंग कॉर्पोरेशन लिमिटेड ।

यह योजना हरियाणा पुलिस हाउसिंग कारपोरेशन द्वारा हरियाणा में विभिन्न स्थानों पर पुलिस स्टाफ क्वार्टर के निर्माण से संबंधित है। परियोजना लागत रुपये **650.41** करोड़ और हडको ऋण राशि रुपये **550.00** करोड़ है। हरियाणा में विभिन्न स्थानों पर स्टाफ क्वार्टरों की भारी कमी है। पुलिस कर्मियों की समस्याओं और कल्याणकारी उपाय के रूप में हरियाणा सरकार ने हरियाणा के विभिन्न स्थानों में अधिक स्टाफ क्वार्टर और अन्य आवश्यक बुनियादी ढांचे का निर्माण शुरू किया है । इस योजना में, हडको वित्तीय सहायता के साथ विभिन्न श्रेणियों यानी टाइप **I,** टाइप **II,** टाइप **III** और टाइप **IV** के तहत पुलिस कर्मियों के लिए आवासीय इकाइयों का निर्माण करने का प्रस्ताव है।

योजना का नाम: पंजाब में विभिन्न स्थानों पर पुलिस क्वार्टरों का निर्माण ।

एजेंसी का नाम: पंजाब पुलिस हाउसिंग कारपोरेशन लिमिटेड।

इस परियोजना में पंजाब राज्य के विभिन्न स्थानों पर पुलिस स्टेशनों का निर्माण और संपदा सेवाओं का प्रावधान शामिल है। कुल परियोजना लागत रुपये 188.29 करोड़ और हडको वित्तीय सहायता रुपये 150.00 करोड़ है। कार्यान्वयन एजेंसी पंजाब पुलिस हाउसिंग कारपोरेशन लिमिटेड

है, जो पंजाब में पुलिस विभाग के लिए आवासीय और गैर आवासीय इमारतों के निर्माण में लगी हुई है। यह परियोजना मौजूदा पुलिस लाइंस के क्षेत्र में कार्यान्वित की जाती है। निर्मित पुलिस स्टेशन तीन श्रेणियों का होगा, नामत **H, H1** और **F1**। इससे कानून व्यवस्था बनाए रखने में मदद मिलेगी जिससे राज्य में शांति और विकास में सुधार होगा ।

योजना का नाम: पंजाब राज्य के विभिन्न शहरी स्थानीय निकायों के लिए जल आपूर्ति और सीवरेज परियोजनाएं।

एजेंसी का नाम: पंजाब म्यूनिसिपल इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कंपनी।

यह योजना पंजाब राज्य के लगभग समस्त शहरी स्थानीय निकायों में जल आपूर्ति और सीवरेज की सुविधा देने के लिए है। इस योजना की नोडल एजेंसी पंजाब म्यूनिसिपल इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कंपनी है और इस स्कीम को पंजाब वाटर सप्लाई एंड सीवरेज बोर्ड के जरिए लागू किया जा रहा है। कुल परियोजना लागत रुपये 2524.48 करोड़ और हडको ऋण राशि रुपये 1540.00 करोड़ है।

परियोजना विभाग, चण्डीगढ़

हडको सी.एस.आर. सहायता

गांव मुधल, जिला अमृतसर, पंजाब में इंफ्रास्ट्रक्चर का सुधार

अमृतसर शहर से लगभग 20 किलोमीटर दूर मुधल एक छोटा सा गांव है। यह गांव 70 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है, जिसमें लगभग 7000 की आबादी है। गांव में स्ट्रीट लाइट, सीवरेज, बरसाती पानी निकासी, शौचालय, एसटीपी जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव था। इसके अलावा सड़कों की हालत भी खराब थी। इस लिए ग्राम पंचायत मुधल ने पहले चरण में निर्धारित सड़कों के चौड़ीकरण और सोलर स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था के लिए हडको को सी.एस.आर. सहायता का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। मौजूदा सड़क केवल 12 फीट चौड़ी थी और इसलिए करीब 24 किमी तक इसे दोनों तरफ 3 फीट चौड़ा करने का प्रस्ताव किया गया । गांव

में 22 नग 30 वाट्स एल.ई.डी. सोलर स्ट्रीट लाइट लगाने का भी प्रस्ताव किया गया ।

इस प्रस्तावित योजना के लिए हडको द्वारा वित्तीय वर्ष 2018-2019 के दौरान रुपये 74 लाख की सी.एस.आर. सहायता स्वीकृत की गई थी। ग्राम पंचायत मुधल ने सी.पी.डब्ल्यू.डी. को इस कार्य का निष्पादन सौंपा। यह कार्य रुपये.72.26 लाख की राशि से पूरा किया गया था और इसका उपयोग अब जनता द्वारा किया जा रहा है। इस परियोजना से ग्रामीणों के रहन-सहन की स्थिति में सुधार लाने में मदद मिली, साथ ही रात के समय महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा भी सुनिश्चित की गई ।

साकेत श्रीवास्तव, संयुक्त महाप्रबंधक (परि०)
श्रीजीथ के. यू., उप प्रबंधक (परि०)

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) - सीएलएसएस

आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय (एमओएचयूए) के प्रमुख कार्यक्रम हाउसिंग फॉर ऑल (एचएफए) में प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) पीएमएवाई (यू) का 25 जून 2015 को शुभारम्भ किया गया था। शहरी गरीब आबादी की आवासीय जरूरतों को पूरा करने करने के लिये देश में पीएमएवाई (यू) के चार प्रोग्राम वर्टिकल शुरू किये गए थे | जो कि इन-सीटू स्लम री-डेवलपमेंट (ISSR), निजी डेवलपर्स की भागीदारी के साथ किफायती आवास (AHP), क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी योजना (CLSS) के माध्यम से कमजोर वर्ग के लिए किफायती आवास, लाभार्थी द्वारा गृह निर्माण (BLC) के लिए सब्सिडी नामक हैं|

प्रधानमंत्री आवास योजना का क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी योजना (सीएलएसएस) वर्टीकल एक क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी योजना है जो गृह ऋण पर सब्सिडी प्रदान करती है और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस) / कम आय वर्ग (एलआईजी) / मध्य आय वर्ग (MIGI) तथा मध्य आय वर्ग (MIGII)की आवासीय आवश्यकताओं को पूरा करने में सहयोग करती है। इसे केंद्रीय क्षेत्र योजना के रूप में लागू किया जा रहा है। इस योजना में ईडब्ल्यूएस / एलआईजी श्रेणी के लाभार्थी रू 6.00 लाख तक की ऋण राशि के लिए 6.5% की दर से ब्याज अनुदान के लिए पात्र होंगे, रू 9.00 लाख तक की ऋण राशि की एमआईजी -1 श्रेणी के लाभार्थी 4% की दर से ब्याज सब्सिडी के लिए पात्र होंगे । रू 12.00 लाख तक की ऋण राशि की एमआईजी -II श्रेणी के लाभार्थी 3% की दर से ब्याज सब्सिडी के लिए पात्र होंगे ।

मंत्रालय द्वारा हडको को सीएलएसएस(CLSS) योजना के लिए केंद्रीय नोडल एजेंसी (CNA) के रूप में चिन्हित किया है ताकि उधार देने वाली संस्थानों यानि प्राथमिक ऋणदाता संस्थान (PLI) के माध्यम से सब्सिडी को चैनलाइज किया जा सके। हडको क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ द्वारा अब तक चार बैंकों हरियाणा राज्य एपेक्स सहकारी बैंक लिमिटेड, पंजाब राज्य सहकारी बैंक लिमिटेड, हिमाचल प्रदेश राज्य सहकारी बैंक लिमिटेड तथा सतलुज ग्रामीण बैंक* के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं दिनांक 28.02.2021 तक इस कार्यालय से जारी सब्सिडी इस प्रकार है:

क्रम सं0	बैंक	सब्सिडी(ईडब्ल्यूएस/ (एलआईजी)		सब्सिडी(एमआईजी)		कुल अवमुक्ति राशि
		संख्या	अवमुक्ति राशि	संख्या	अवमुक्ति राशि	
1.	हरियाणा राज्य एपेक्स सहकारी बैंक लिमिटेड	-	-	11	रू22,36,423/-	रू22,36,423/-
2.	सतलुज ग्रामीण बैंक	5	रू 10,62,074/-	1	रू1,55,556/-	रू12,17,630/-
	कुल	5	रू 10,62,074/-	12	रू23,91,979/-	रू34,54,053/-

*(सतलुज ग्रामीण बैंक के पंजाब ग्रामीण बैंक में 01.01..2019 को विलय के बाद इस बैंक की केंद्रीय नोडल एजेंसी नेशनल हाउसिंग बैंक हो गयी है।)

हरजोत कौर, संयुक्त महाप्रबंधक (परि०)
श्रीजीथ के. यू., उप प्रबंधक (परि०)

चंडीगढ़ हाउसिंग बोर्ड हडको बेस्ट प्रैक्टिसेज अवार्ड से सम्मानित

हडको के बेस्ट प्रैक्टिसेज अवार्ड 2019-20 की थीम "हाउसिंग, अर्बन पॉवर्टी एंड इन्फ्रास्ट्रक्चर" के तहत "स्लम रिहैबिलिटेशन प्रोग्राम" के लिए चंडीगढ़ हाउसिंग बोर्ड को सम्मानित किया गया। श्री आकाश त्यागी, क्षेत्रीय प्रमुख, चंडीगढ़ ने 7 जनवरी, 2021 को इस पुरस्कार का प्रमाण पत्र श्री यशपाल गर्ग, आई.ए.एस., मुख्य कार्यकारी अधिकारी, चंडीगढ़ हाउसिंग बोर्ड को प्रदान किया। इस अवसर पर सुश्री रूचि सिंह बेदी, सचिव, चंडीगढ़ हाउसिंग बोर्ड और श्री राजीव सिंगला, चीफ इंजीनियर, चंडीगढ़ हाउसिंग बोर्ड और श्रीमती हरजोत कौर, संयुक्त महाप्रबंधक भी उपस्थित थे।

नगर निगम,रोहतक हडको बेस्ट प्रैक्टिसेज अवार्ड से सम्मानित

हडको के बेस्ट प्रैक्टिसेज अवार्ड 2019-20 की थीम "इम्प्रूव द लिविंग एनवायरनमेंट" के तहत "स्थलाकृतिक सर्वेक्षण और कैडस्टल मैपिंग" के लिए रोहतक म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन को सम्मानित किया गया। श्री आकाश त्यागी, क्षेत्रीय प्रमुख, चंडीगढ़ ने 3 नवम्बर, 2020 को इस पुरस्कार का प्रमाण पत्र श्री के. के. वार्ष्णेय, मुख्य नगर योजनाकार ,शहरी स्थानीय निकाय, हरियाणा सरकार को प्रदान किया ।

अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस 2020 पर क्षेत्रीय कार्यालय की महिला सदस्यों को बधाई

महात्मा गांधीजी की151वी जयंती के अवसर पर02अक्टूबर, 2020को "स्वच्छता के6साल बेमिसाल" के अभियान के अंतर्गत हडको क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ ने वेबेक्स माध्यम से वर्चुअल रूप से जुड़कर "स्वच्छता के6साल बेमिसाल" के अभियान में भाग लिया तथा सभी कार्मिकों ने स्वच्छता प्रतिज्ञा ली।

श्रद्धांजलि

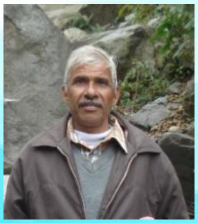

श्री शेर सिंह ए एफ(रिटा.) का लम्बी बीमारी के बाद दिनांक 15.03.2020 को स्वर्गवास हो गया | भगवान उनको अपने श्री चरणों में स्थान दें |

सेवानिवृतियाँ

श्री उधम सिंह, ए एफ,ने दिनांक 30.09.2020 को 36 वर्षों की सेवा के बाद, क्षेत्रीय कार्यालय से सेवा निवृति प्राप्त की|

श्री पवन कुमार गुप्ता, सहा. महाप्रबंधक (प्रशाशन) ने दिनांक 31.05.2020 को35 वर्षों की सेवा के बाद क्षेत्रीय कार्यालय से सेवा निवृति प्राप्त की ।

चंडीगढ़ क्षेत्रीय कार्यालय के तहत हडको वित्तीय सहायता से पूर्ण परियोजनाएं

रिस्कमैनेजमेंटपर नेशनल इंस्टिट्यूटऑफ़ बैंक मैनेजमेंटपुणे में आयोजित कार्यक्रम
10.02.2019 – 14.02.2019

श्रीमती हरजोत कौर (संयुक्त महाप्रबंधक-परि०) तथा श्री रमेश कुमार(प्रबंधक-वित्त)नेक्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ से भाग लिया

गैर-वित्त अधिकारियों के लिएवित्त परदो दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन
15.10.2019 – 17.10.2019

श्रीमती कंवलजीत कौर,वरि प्रबंधक (आर० ओ०) तथा श्री निर्मल सिंह, उप प्रबंधक(सचिव-रा०भा०)नेक्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ से भाग लिया

राजभाषा के प्रचार-प्रसार को गति प्रदान करने तथा हडको में राजभाषा नीति केसुदृढ़ अनुपालन को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 26 एवं 27 दिसंबर, 2019 को हडको के प्रशिक्षण केंद्र एचएसएमआई में दो दिवसीय राजभाषा मंथन संगोष्ठी का आयोजन किया गयाI

श्रीमती नीलम मागो, नोडल अधिकारी / प्रबंधक (सचिव) तथा (श्री महेश शर्मा नोडल सहायक / (सहा० प्रबंधक-आई० टी०) ने क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ से भाग लिया

हडको में बीस वर्षों / तीस वर्षों की सेवा प्रदान करने पर सेवा परस्कार से सम्मानित

श्री निर्मल सिंह,
उप प्रबंधक (सचि० राजभाषा)

श्रीमती कंवलजीत कौर,
व. प्रबंधक (आर ओ)

श्री संजीवचोपड़ा,
संयुक्त महाप्रबंधक (विधि)

माही त्यागी सुपुत्री श्री आकाश त्यागी, क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा खूबसूरत पेंटिंग

विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियां प्राप्त करने वाले हडको परिवार के सदस्य

मास्टर मनमोहित सिंह सुपुत्र श्री हरविंदर सिंह, उप प्रबंधक (आई. टी) ने राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी), चंडीगढ़ द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय विज्ञान एवं गणित प्रदर्शनी 2020-21 में द्वितीय स्थान प्राप्त किया |

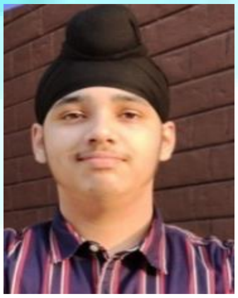

मास्टर नवकरण सिंह सुपुत्र श्रीमती कंवलजीत कौर, वरिष्ठ प्रबंधक (प्रशासन), ने मई 2020 में, 10वी बोर्ड परीक्षा में 93% अंक प्राप्त किये |

कुमारी आरुषि भंडारी सुपुत्री श्री राजीव भंडारी ,उप प्रबंधक (प्रशासन), ने मई 2020 में 12वी बोर्ड परीक्षा में 95.8% अंक प्राप्त किये |

मास्टर राहुल शर्मा सुपुत्र श्री रमन कुमार प्रबंधक (सचिव) ने मई 2020 में 12वी बोर्ड परीक्षा में 91% अंक प्राप्त किये और पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज, चण्डीगढ़ में JEE (Main) के माध्यम दाखिला प्राप्त किया|

लेफ्टिनेंट सहगुरबाज़ सिंह सुपुत्र श्रीमती हरजोत कौर, संयुक्त महा प्रबंधक (परि) ने जून 2020 में भारतीय सेना में कमीशन प्राप्त किया |

मानवीय अधिकारों तथा धार्मिक स्वतंत्रता के रक्षक - श्री गुरु तेग बहादुर जी

श्रीगुरु तेगबहादुर जी के 400वें प्रकाश पर्व पर श्रद्धापूर्वक विशेष समर्पण।

समस्त धर्म, मानवता तथा सिध्दातों की रक्षा के लिए अपना आपन्योच्छावर करने वाले सिखों के नौवें गुरुश्री गुरु तेगबहादुर जी का विश्व में विशेष स्थान है। आज जिस मानवीय अधिकारों (Human Rights) की हम बात करते हैंउस के असल संस्थापक श्री गुरु तेगबहादुर जी ही हैंक्योंकि आप ने सन्1675ई. में हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु अपने तथा अपने सह-सिखों सहित धार्मिक स्वतंत्रता और मानवीय मूल्यों के लिए दिल्ली (चाँदनी चौक) में शहादतप्राप्त की। (**'शहीद'**लफ्ज़ अरबी भाषा के**'शहादत'**शब्दसे आया है, जिस का अर्थ है- गवाही देने वाला, धर्म युद्ध में अपना जीवन कुरबान करने वाला।[1])

श्री गुरु तेगबहादुर जी का प्रकाश सन् 1621 ई. में माता नानकी जी के उदर से 'गुरु के महिल' श्री अंमृतसर में हुआ। आपके प्रकाश के समय आपके पिता छठम गुरु, गुरु हरिगोबिंद जी, श्री दरबार साहिब में 'आसा की वार' का कीरतन श्रवण कर रहे थे। जब गुरु जीको बालक के प्रकाश की खबर मिली, तबगुरु जी दरबार की समाप्ति कर सिखों समेत अपने महल पहुँचे। गुरु जीने बाल (श्री गुरु) तेगबहादुर जी के दर्शन कर अपना सीस बालक के आगे झुका दियातो भाई बिधि चंदइस अचरज कौतुक को देखकर पूछने लगेतबगुरु जी ने भविष्य में बालक के महान तपस्वी तथायोद्धा होने की बात बताई।[2]

श्री गुरु तेगबहादुर जी की पढ़ाई तथा शस्त्र विदया की सिखलाई बाबा बुढा जी, भाई गुरदास जी, भाई बिधि चंद जी, भाई जोध जी आदि ने की। जिन्होंने आपको भारतीय भाषाओं और शस्त्रों की महारत हासिल करवाई। इस की मिसाल श्री गुरु ग्रंथ साहिब मे आपके द्वारा रचित 15 रागों में 59 शब्द तथा 57श्लोकहैं। करतारपुर (पंजाब) की जंग में आपने बेमिसाल बहादुरी भी दिखाई ।

आप का विवाह करतारपुर निवासी भाई लाल चँद सुभिखी की पुत्री (माता) गुजरी जी से हुआजिनके उदर से सन् 1666 ई. में बाल गोबिंदराय ने अवतार लिया जो बाद में सिखों के दसवें गुरु गोबिंद सिंह के नाम से जाने गए।

सन् 1644ई. में पिता गुरु हरिगोबिंद जी के ज्योति जोत समाने के उपरांत आप अपने नानके, 'ग्राम बकाले', रहने लगे, वहीं आपने 'अकाल पुरख' (भगवान) की आराधना की। सन् 1664ई.में आठवें गुरु हरिकिशन जी नेज्योति जोत समाने से कुछ समय पहले दिल्ली से आपको गुरु पदवीदेते हुए बाबा बकाले कहा जिसकाअर्थहै कि अगले गुरु ग्राम बकाले, पंजाब में है।[3] इस के पश्चात आपने समस्त मानव जाति के कल्याण हेतु प्रचार दौरे भी किए।

आपके गुरु काल के समय औरंगजेब की कटड़ताओं का अंत न रहा।उसनेपूरे भारत में एक ही धर्म को लागू करने का ऐलान कर दिया औरजो भी मुस्लिम बनने से इन्कार करे उसे मौत की सजा दिए जाने का आदेश दे दिया। इस सब की शुरूआत उस ने कश्मीर में उच्च कोटि के ब्राहमणों से कीजिससे कश्मीरी पंडितों ने भयभीत तथा तंग होकर अपने मुखियापंडित कृपादत्त की अगवाई में श्री आनंदपुर साहिब, पंजाब आकर श्री गुरु तेगबहादुर जी के समक्ष अपनी वेदना की पुकार की। गुरु साहिब ने उनकी वेदना सुनकर कहा, कि इस जुल्म को रोकने के लिए किसी धर्मात्मा की कुरबानी की जरूरत है जिस को सुनकर बाल (गुरु) गोबिन्द (सिंह) ने कहा कि इस समय आपसे बड़ा धर्मात्माकौन है ?यह सुनकर गुरु जी नेब्राहमणों को धैर्य दिया और खुद ही तीन सिखों समेत दिल्ली चल पड़े।

---

[1]काहन सिंह नाभा, *महान कोश,* भाषा विभाग, पंजाब, नोंवा संस्करण, 2019, पृ. 159

[2]भगत सिंह, *गुरु बिलासपातशाही छेंवी,* अध्याय9, पंजाबी यूनिवर्सिटी 1997, पृ. 455

[3]भाई केसर सिंह छिबर, *बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का,* पिआरा सिंह पदम (संपा.), सिंघ ब्रदरज़,अंमृतसर,1997, पृ. 110.पटियाला

आपने कश्मीरी पंड़ितों, ब्राहमणों की प्रतिनिधिता में औरंगजेब को यह कहा कि अगर तुम मुझे मुस्लिम बना दोगे तो यह सारे खुद ही तुम्हारी शरण में आ जाएंगे। गुरु साहिब तथा उनके तीन सिखों को औरंगजेब अपने धर्म में परिवर्तित न कर सका क्योंकि गुरु साहिब ने हिन्दू धर्म और मानवीय मूल्यों की रक्षा करते हुए अपना सीस शरीर से अलग करवा दिया।

तिलक जंज्जू राखा प्रभ ताका॥कीनो बड़ो कलू महि साका॥
साधनि हेति इती जिनि करी॥सीसु दीआ पर सी न ऊचरी॥

धरम हेत साका जिनि कीआ॥सीसु दीआ पर सिररु न दीआ॥[4] गुरु गोबिंद सिंह

श्री गुरु तेगबहादुर जी की यह शहादत केवल एक समुदाय के लिए नहीं बल्कि सभीधर्मों की स्वतंत्रता तथा मानवीय अधिकारों के लिए है।

हरनीत कौर
सुपुत्री श्री केसर सिंह, वरिष्ठ ड्राईवर

हिरणी की प्रार्थना

एक बार एक शिकारी अपने कुत्ते के साथ जंगल में शिकार करने के लिए निकलता है । शिकार ढूंढते ढूंढते उसे एक मादा हिरण उछलती कूदती दिखी जो कि गर्भवती थी । शिकारी ने उसका पीछा करना शुरू कर दिया । बेचारी हिरणी जान बचाने के लिए इधर उधर झाडियों में छिपने लगी परंतू शिकारी लगातार उसका पीछा कर रहा था।

शिकारी ने हिरणी को मारने के लिए एक चक्रव्यूह रचा। उसने एक तरफ जंगल में आग लगा दी। दूसरी तरफ जाल बिछा दिया । तीसरी तरफ कुत्ते को बिठा दिया तथा चौथी तरफ स्वयं अपने हथियार लेकर बैठ गया । जब हिरणी को लगा कि मैं और मेरे गर्भ मे पल रहा बच्चा नही बच सकेंगे तो उसने परमात्मा से प्रार्थना की कि हे ईश्वर संसार के रखवाले, मेरे जीवन जीने के सारे रास्ते बंद हो चुके हैं, एक आप ही मेरे और मेरे गर्भ मे पल रहे बच्चे की प्राणों की रक्षा कर सकते हो।

हिरणी की प्रार्थना भगवान ने सुन ली और सबसे पहले अग्नि देव को हुक्म कर जाल को आग की लपटों से जला दिया । फिर उसी प्रकार इन्द्र देव को हुक्म किया कि वो वर्षा कर जंगल की आग को बुझा दे. तो इन्द्र देव ने वैसा ही किया और आग को बुझा दिया। अब शिकारी के पीछे से एक जहरीले सांप ने शिकारी को डस लिया जिससे शिकारी मर जाता है तथा उसके कमान से एकदम तीर छूट कर उसके कुत्ते को लग जाता है और वह भी मर जाता है । इस प्रकार हिरणी उस शिकारी के चक्रव्यूह से आजाद हो जाती है और अपने गर्भ में पल रहे बच्चे के साथ अपने चारे की तलाश के लिए निकल जाती है।

शिक्षा - इस रचना से हमें यह शिक्षा मिलती है कि यदि सच्चे मन से भगवान को याद किया जाए और उसके आगे फरियाद की जाए तो वह हमेशा हमारी प्रार्थना सुनता है तथा सदैव हमारे अंग संग होता है ।

हिमानी शर्मा
सुपुत्री श्री रमन कुमार, प्रबंधक (सचि०)

[4] *बचित्र नाटक*, श्रोमणी गुरदुआरा प्रभंधक कमेटी,अंमृतसर, 2000, पृ. 58.

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी की पासिंग आउट परेड

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए),खडकवासला, पुणे में तीन वर्षों की पढाई तथा ट्रेनिंग की समाप्ति के बाद शानदार पासिंग आउट परेड आयोजित की जाती है | इस परेड में पासिंग आउट होने वाले कैडेट्स के माता पिता तथा बहन / भाई को भी अकादमी द्वारा आमंत्रित किया जाता है |यह परेड एक और सफल टर्म की परिणति को भी दर्शाती है। कैंपस में स्थित खेत्रपाल परेड ग्राउंड में आयोजित होने वाली इस अनूठी परेड में एक हजार से भी अधिक कैडेट प्रतिभागिता लेते हैं और अपने वरिष्ठ सहयोगियों को विदाई देते हैं। इस परेड में ड्रिल मूवमेंट्स के उत्कृष्ट प्रदर्शन को बैंड के साथ सिंक्रनाइज़ किया जाता है जोकि प्रतिभागियों के साथ-साथ दर्शकों में भी अविस्मरणीय याद और अमिट छाप छोड़ देती है | अपने उत्कृष्ट घोड़े पर अकादमी एडजुटेंट भी पासिंग आउट कैडेट्स के साथ परेड में शामिल रहते हैं | अंत में पासिंग आउट कैडेट्स 'ऑल्ड लैंग सिने ' के सेना बिदाई गीत पर धीमी चाल पर मार्चपास्ट करते हुए और राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते हुए अंतिम पग (फाइनल स्टेप्स) को पार कर जाते हैं।

समापन के क्षणों में धीमी गति से क्वार्टर डेक पर जाते पासिंग कोर्स के कैडेट्स को वहां के मास्त पर तैनात सबसे जूनियर कोर्स के कैडेटों द्वारा चीयर अप किया जाता है | अंतिम चरण के दौरान प्रत्येक कैडेट अकादमी में बिताये तीन घटनापूर्ण वर्षों में घटित संस्मरणओं को याद करते हुए अपने माता पिता / परिवार कि उपस्थिति में निश्चित रूप से अपनी उपलब्धि पर गर्व महसूस कर सकता है। तीन साल पहले इन कैडेट्स ने इस पवित्र संस्थान के द्वार से शायद कुछ डर और घबराहट से प्रवेश किया था परन्तु अब वे इस अकादमी को एक ऐसे युवा व्यक्ति बन कर छोड़ रहे हैं जो कि शरीर और मन से मजबूत तो है ही साथ ही आत्मविश्वास से भरपूर है और अकादमी में सीखे गए नैतिक मूल्यों पर आश्वासित हो कर गर्व भी करता है। अब वह एक सज्जन और एक सैन्य अधिकारी के आदर्शों को प्राप्त करने के अपने रास्ते पर अग्रसर है।

कदम कदम बढ़ाए जा, ख़ुशी के गीत गाए जा |
ये जिंदगी है कौम की, तू कौम पे लुटाए जा |

मुझे एक्स एन डी ए होने पर गर्व है|

लेफ्टिनेंट सहगुरबाज़ सिंह
सुपुत्र श्रीमती हरजोत कौर, संयुक्त महाप्रबंधक (परि०)

सूत्र नेति के लाभ और विधि

अपने शरीर का अगर आप शुद्धिकरण करना चाहते हो तो उसका सबसे आसान तरीका होता है सूत्र नेति । इस मानव रूपी यंत्र को क्रियाशील बनाये रखने के लिए इसकी सफाई और शोधन की आवश्यकता होती है । मनुष्य के शरीर रूपी यंत्र का बाहरी शोधन आसन के जरिये हो जाता है । शोधन करने के लिए हमें अनेक प्रकार की क्रिया को करना पड़ता है । नासिका के द्वारा सांस ली जाती है जो हमारे प्राणों के लिए बहुत ही आवश्यक है । मानव को प्राणयाम के बाद क्रियाओं को भी करना सीखना चाहिए ये क्रिया थोड़ी कठिन आवश्य होती है लेकिन जब हम नियमित रूप से करते है तो इसें धीरे-धीरे सीख जाते है । यह एक प्राण मार्ग होता है और इसके शोधन के लिए नेति नामक क्रिया करनी पड़ती है । जब हम इसका अभ्यास नियमित रूप से करते है तो इसके करने से हमें सर्दी, जुकाम, कफ, अनिद्रा और साथ में मस्तिष्क में जाने वाले रक्त में आक्सीजन के प्रभाव को ठीक करता है ।

<u>सूत्र नेति क्रिया की विधि</u>

1. इस क्रिया को करने के लिए योग प्रकरण में उल्लेखित धागा लें जिसकी लम्बाई बारह इंच के आसपास होती है और इस बात का ख्याल रखें कि वो आपकी नासिका के छिद्र में आसानी से जा सके ।
2. अब इस धागे को गुनगुने पानी में भिगो लें और इसका एक छोर नासिका छिद्र में डालकर मुंह में बाहर निकालें ।
3. यह प्रक्रिया बहुत ही ध्यान से करें । फिर मुंह और नाक के डोरे को पकड़ कर धीरे-धीरे उपर नीचे खीचना चाहिए ।
4. इसके बाद इसी प्रकार दूसरे नाक के छेद से भी करना चाहिए ।
5. इस क्रिया को एक दिन छोड़ कर करना चाहिए ।

<u>सूत्र नेति करने के लाभ</u>

नेति दो प्रकार की होती है जल नेति और सूत्र नेति । इन दोनो नेतियों के द्वारा नासिका को स्वच्छ बनाया जाता है और सांस को सुचारू किया जाता है, इसको करने से हमारे शरीर को बहुत लाभ होते है जो इस प्रकार से है -

- जब हम इस क्रिया को करते है तब हमारे दिमाग का भारीपन और तनाव दूर हो जाता है, जिससे हमारा दिमाग सेहतमंद रहता है ।
- जब हम इस क्रिया को करते है, तो हमारी नासिका मार्ग की सफाई तो होती है साथ में हमारे कान, नाक, दांत, गले आदि के रोगों का सामना नहीं करना पड़ता ।
- इसको करने से हमारी आखों की दृष्टि तेज होती है ।
- जब हम इस क्रिया को लगातार करते है तो हमें सर्दी जुकाम और खांसी की शिकायत नहीं रहती।
- यह क्रिया हमारे सम्पूर्ण शरीर के लिए बहुत ही फायदेमंद साबित होती है ।

अपनी आंतरिक साफ सफाई का ध्यान रखने हेतु इस कोविड महामारी काल में नेति क्रिया की महत्ता और भी बढ़ जाती है ।

सूत्र नेति क्रिया में सावधानियां
इस क्रिया को करना कठिन होता है, इसलिए जब भी हम इसे करते हैं तो सबसे पहले इसका अभ्यास हमें रबड़ द्वारा बनी हुई नेति के साथ करना चाहिए। जब भी हम इसे कर रहे हों, तो इस क्रिया में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। क्योंकि इसे जल्दबाजी के साथ करने से हमारी नासिका को हानि का सामना करना पड़ सकता है। जब भी हमने इस क्रिया को करना हो तो रात में शुद्ध देसी घी की कुछ बूंदे नाक में डाल लेनी चाहिए ।

वर्ष 1998 से उपरोक्त नेति क्रिया मेरे द्वारा लगातार की जा रही है ।

संजीव चोपड़ा
संयुक्त महाप्रबंधक-विधि

स्वस्थ जीवन शैली एवं योग

(राजभाषा पखवाड़ा 2020 में प्रथम पुरस्कृत निबंध)

एक स्वस्थ जीवन शैली एक अच्छे जीवन की नींव है। हालांकि इस जीवन शैली को गृहण करने में बहुत ज्यादा समय नहीं लगता लेकिन अनेक कारणों से कई लोग इन दिनों इसका पालन करने में असमर्थ रहते हैं जैसे कि पेशेवर प्रतिबद्धता, दृढ़ संकल्प की कमी एवं वेभिन्न व्यक्तिगत मुद्दे।

एक स्वस्थ जीवन शैली के सञ्चालन के लिए, दृढ़ संकल्प अति आवश्यक है। दैनिक कार्य पूरा करने की भागदौड़ मैं, स्वास्थ्य को अक्सर कम महत्व मिलता है। एक स्वस्थ जीवन शैली का पालन करने और इसे हासिल करने के तरीकों को समझना आज के समय में अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है।

आज के भाग दौड़ के जीवन में हमें समय का पता ही नहीं चलता। योग एक ऐसा साधन है जिससे हम अपने जीवन को सही ढंग से और तंदुरुस्ती से जी सकते हैं। सुबह का समय ताजी हवा से भरा हुआ होता है। नई सुबह नए दिन की शुरुआत करती है। सुबह का समय योग के लिए सबसे अच्छा होता है। शरीर के हर भाग के लिए विभिन्न योग मुद्राएं हैं। अगर हम सही तरीके से योग करते हैं तो हमारे शरीर का सही विकास होता है और हमें किसी प्रकार का भार महसूस नहीं होता। हमारी दिनचर्या ताजगी से भरी होती है।

मानसिक रूप से भी योग हमें बहुत आराम देता है। जिसके कारण हमारा दिमाग शांत रहता है और हम हर काम पूरे ध्यान से कर सकते हैं। इसीलिए कहा जाता है किd योग हमारे शरीर के साथ-साथ हमारी आत्मा को भी तंदुरुस्त रखता है। इसीलिए आज के भाग दौड़ के जीवन में योग को अपना महत्वपूर्ण हिस्सा बना लेना चाहिए और इसे अपनी रोजाना जिंदगी में शामिल कर लेना चाहिए।

श्रीजीथ के. यू.,
उप प्रबंधक (परि०)

गुलेल से मेरा पहला शिकार - गौरैया चिड़िया

बात उस समय की है जब मैं कक्षा चौथी या पांचवी,में पढ़ता था । हम स्कूल के समय से आधा पौना घंटा पहले पहुंच जाया करते थे । सारे बच्चे अपना अपना बस्ता एक लाइन में रखते थे ।लाइन की एक तरफ कबड्डी की एक टीम होती थी और दूसरी तरफ दूसरी टीम। खेल के मैदान की कोई सीमा नहीं थी, सिर्फ बीच वाली लाइन बस्तों के सहारे बनाई जाती थी, कभी कबड्डी खेलते,कभी लंगडी,कभी एक-दूसरे को छूने वाला खेल,कभी कोई पुराना डब्बा मिल जाता तो उसे दीवाल के पास एक कोने में रख देते थे और पत्थर उठाकर बारी-बारी से निशाना लगाते थे ।

माही त्यागी सुपुत्री श्री आकाश त्यागी, क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा खूबसूरत पेंटिंग

मेरा एक मित्र था गुड्डू,वह हमारे खेलों में कम रुचि रखता था ।जब भी उसको समय मिलता,वह छोटे-छोटे गोल-गोल कंकड़ ढूंढने में व्यस्त रहता था । दरअसल उसके पास2-3 तरह की गुलेल थी,और गुलेल में रखकर चलाने के लिए हर समय उसे छोटे-बड़े गोल-गोल कंकड़ों और पत्थरों की तलाश रहती थी ।उसका निशाना अचूक था,उसका दावा था कि उस समय तक वह35 -40 चिड़िया मार चुका था ।वह हमें बताया करता था कि चिड़िया को गुलेल का पत्थर लगने पर वह नीचे गिर जाती है,कभी-कभी तो मर जाती है,और कई बार अगर निशाना पैरों पर या पंखों पर लगे तो वह गिरने के बाद पंख फड़फड़ा कर दोबारा उड़ जाती है ।अतः जब भी चिड़िया पर निशाना लगाओ उसके गिरते ही एक बड़ा पत्थर लेकर उसे कुचल दो। गुड्डू का कहना था कि चिड़िया का खून गुलेल के बत्ते अर्थात लकड़ी वाले हिस्से में लगाना चाहिए । गुलेल का बत्ता जितनी अधिक चिड़ियों का खून पीता है,उसका निशाना उतना ही पक्का होते जाता है। गुड्डू बताता था कि कई बार वह गुलेल से दीवार पर बैठे ततैया को भी मार चुका है ।

गुड्डू हमारे ही मोहल्ले में रहता था, उसके पिताजी बढ़ई का काम करते थे ।मोहल्ले में हम लोग अक्सर भंवरा या कंचे खेला करते थे,गुड्डू भी हमारे साथ खेलता था खेलते समय वह अपनी गुलेल गर्दन में लटका कर रखता था ।पता नहीं कैसे अचानक उससे मेरी दोस्ती बढ़ गई

।एक दिन हम उसके पिताजी के पास गए और गुलेल का बत्ता बनवा लिया ।बाजार में साइकिल की दुकान से एक पुराना ट्यूब उठा लाए फिर एक मोची के पास जाकर हमने उसको पट्टी की तरह कटवाया और उसके पास से ही चमड़े का एक टुकड़ा25 पैसे में लेकर गुलेल का चिपट बनवाया । चिपट यानी गुलेल का वह हिस्सा जिस पर पत्थर को फंसाया जाता है । फिर गुड्डू ने मुझे गुलेल बनाकर दे दिया ।मैं भी घर के आस-पास निशाना लगाने लगा । शुरुआत बिजली के खंबों से हुई थी ।हमारे पिताजी हिमालयन कंपनी का liv 52 टैबलेट खाया करते थे । उसके खाली डिब्बे को दीवाल के पास रखकर उस पर निशाना लगाया करता था ।जब उसकी प्रैक्टिस हो गई तो गुड्डू ने मुझे बताया कि इंजेक्शन की शीशी पर निशाना लगाना चालू करो ।

आपको याद होगा हमारे बचपन मे इंजेक्शन का पाउडर एक छोटी सीसी में आता था,और डिस्टिल्ड वाटर एक लंबी सीसी में आता था ।अस्पताल का कंपाउंडर पहले डिस्टिल्ड वाटर की बोतल को तोडकर, उसमे सुई घुसाकर, सिरिन्ज में खींचता था ।फिर उसे पाउडर वाली सीसी में मिलाया करता था । फिर शीशी को कुछ देर तक हिलाया करता था और तब फाइनल दवा तैयार होती थी ।खैर इस तरह की खाली शीशियां इकट्ठी करके मैं उस पर भी निशाना लगाने लगा ।मेरे निशाने से संतुष्ट होने के बाद गुड्डू ने मुझे कहा कि अब मैं चिड़ियों पर निशाना लगा सकता हूं । हालांकि जब भी मैं घर में गुलेल की प्रैक्टिस करता था,मेरी मां मुझे डांटती थी और कहती थी कि कभी चिड़ियों को मत मारना ।लेकिन मन में यह लालच था चिड़ियों का खून गुलेल को पिलाने के बाद गुलेल का निशाना और पक्का हो जाएगा ।

हमारे आंगन में गुडहल का एक घना पेड़ था इसमें अक्सर गौरैया का झुंड आया करता था ।एक दिन दोपहर,अम्मा लोग पापड़ बनाने में व्यस्त थे ।मेरी ड्यूटी पापड सुखाने और बंदर भगाने के लिए लगी थी इस बीच मै लगातार चिड़ियों का इंतजार करता रहा,चिड़ियों के कई झुंड आए और गए ।कई बार निशाना लगाया, मगर चूक गया ।कुछ देर बाद एक अकेली चिड़िया आकर बैठ गई ।मैंने पहले से एक बड़ा पत्थर अपने पास रख लिया था, ताकि अगर सही निशाना लग जाए तो चिड़िया को तुरंत कुचल कर मार डालूंगा और उसका खून गुलेल के बत्ते को पिलाऊंगा । मौका देखकर मैंने चिड़िया पर निशाना साधा और गुलेल चला दी ।पत्थर निशाने पर लगा था और चिड़िया पत्तों के बीच से बलखाती हुई जमीन में आ गई ।मैं खुशी से झूम उठा और पत्थर लेकर चिड़िया को मारने दौड़ा ।दौड़ते हुए मैंने देखा,चिड़िया पंख फड़फड़ाने की कोशिश कर रही है मगर उड़ नहीं पाती ।मैंने दौड़ने की गति बढ़ाई ताकि जल्दी उसको कुचल सकूं ।उसके पास पहुंचकर मैंने देखा चिड़िया एक करवट किए हुए पड़ी थी,पंखों में थोड़ी हलचल थी,मैं बस पत्थर उठाकर उसे मारने को ही था कि अचानक मेरी आंखें चिड़िया की आंखों से मिल गई ।चिड़िया बड़ी कातर दृष्टि से मेरी ओर देख रही थी,मानो कह रही हो,"तुमने मुझे क्यों मारा, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था " आज भी मुझे चिड़िया की वह बोलती आंखें याद है ।उसको याद करता हूं तो दिल कचोटता है ।मैंने तुरंत पत्थर को फेंक दिया और भगवान से प्रार्थना करने लगा,हे भगवान किसी तरह चिड़िया की जान बचा देना आज के बाद कभी किसी चिड़िया को नहीं मारूंगा ।

अचानक मेरे मन में आया कि चिड़िया को सुरक्षित जगह में ले जाऊँ, क्योंकि हमारे घर बहुत सी बिल्लियां आया करती थी और अक्सर चिड़ियों को मारकर खा जाती थी ।मैंने धीरे-धीरे प्यार से चिड़िया को पुचकारते हुए, हौले से हथेलियों में उठा लिया। पता नहीं कैसे चिड़िया को मुझ पर विश्वास हो गया और उसने पंख फड़फड़ा कर इधर उधर भागने की कोशिश बंद कर दी,आराम से मेरे हाथों में आ गई। उसको लेकर मैं भगवान कमरे में आ गया। हमारे घर में बांस की सीक से बनी एक टोकरी पड़ी थी,पुराने कपड़े का एक टुकड़ा लेकर चिड़िया को जमीन पर लिटाया और उसके ऊपर मैंने टोकरी रख दी टोकरी के ऊपर एक बड़ा पत्थर रख दिया ताकि रात के समय बिल्ली या चूहे उसे नुकसान ना पहुंचा सके ।

माता जी को पता चला तो पहले बहुत नाराज हुई फिर जब मैंने उन्हें बताया कि मैं किसी तरह चिड़िया की जान बचाना चाहता हूं तो फिर उन्होंने मुझे गाइड करना शुरू किया। चिड़िया को पानी पिलाने के लिए मैं रुई को पानी में डुबोकर धीरे धीरे उसके चोंच के पास ले जाता था,और रुई में चोंच मार कर वह पानी पी लेती थी । खाने के रूप में उसे हम पका हुआ चावल,मसला हुआ हरा चना देते थे ।आपको याद होगा हमारे बचपन में घर में जो भी सब्जी या भाजी आती थी उसमें बहुत सी इल्लियां और कीड़े निकलते थे ।मैं ऐसे कीडे इल्लियो को लाकर चिड़िया को खिलाता था ।दूसरे दिन शाम तक चिड़िया थोड़ा थोड़ा अपने पैरों पर बैठने लगी ।तीसरे दिन सुबह मैंने देखा कि वह पंख फड़फड़ा घर थोड़ा-थोड़ा होने का प्रयास करती है मगर गिर जाती है ।हम उसे बंद कमरे में उड़ने का अभ्यास करने देते थे ।

इस बीच एक और अच्छी बात हुई, आंगन में चिड़ियों की आवाज सुन कर हमारी चिड़िया भी चहकने लगती थी और हमें बड़ी खुशी होती थी ।चौथे या पांचवें दिन कमरे का दरवाजा खुला रखकर जैसे ही मैंने टोकरी उठाई चिड़िया फुर्र से उड़ गई और आंगन के एक पेड़ में जा बैठी और जोर जोर से चिल्लाने लगी ।थोड़ी देर में कुछ और चिड़िया उस डाल पर आ गई और सब आपस में बातें करने लगे। फिर सब के सब उडकर दूर चले गए। चिड़िया को उड़ते देखकर मुझे अपार खुशी हुई,अपराध बोध जाता रहा। जब तक चिड़िया कमरे में थी,दिन में कई बार उसको देखता था ,खाना खिलाता था,पानी पिलाता था ,चिड़िया द्वारा की गई गंदगी साफ करता था ।चिड़िया के जाने के बाद कुछ दिनों तक सू ुना लगता रहा । आज भी इस घटना को याद करता हूं तो भगवान को बहुत बहुत धन्यवाद देता हूं कि चिड़िया की जान बचाकर उन्होंने मुझे जीवन भर के लिए अपराध बोध से बचा लिया था ।

साकेत श्रीवास्तव
संयुक्त महाप्रबंधक (परि०)

एक संत के विचार

माही त्यागी सुपुत्री श्री आकाश त्यागी, क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा खूबसूरत पेंटिंग

हम सारे लोग दूसरों का तो बहुत निरीक्षण करते हैं। स्वयं की निरीक्षण कभी कोई मुश्किल से करता होगा। हम प्रशंसा भी करते हैं और निंदा भी करते हैं, लेकिन प्रशंसा भी दूसरों की होती है और निंदा भी दूसरों की। आत्म-निरीक्षण हम करते नहीं, हमारा चित्त निरंतर दूसरों के संबंध में सोचने में सलंग्न होता है। स्वयं के संबंध में विचार, स्वयं के संबंध में आब्जर्वेशन निरीक्षण, स्वयं के बाबत भी तटस्थ खड़े होकर सोचने की वृत्ति मुश्किल से होती है। और जिसमें नहीं है ऐसी वृत्ति, वह करीब-करीब जिन बातों को दूसरों में निंदा करता है, करीब-करीब उन्हीं बातों को स्वयं में जीता है। जिन बातों के लिए दूसरों को कोसता है, कंडमनेशन करता है, उन्हीं बातों को स्वयं में पालता है और पोसता है और उसे पता भी नहीं चलता कि यह क्या हो रहा है? पता इसलिए नहीं चलता कि वह कभी खुद की तरफ लौट कर नहीं देखता है, देखता रहता है दूसरों की तरफ, खुद की तरफ लौट कर नहीं देखता।

जो व्यक्ति खुद की तरफ लौट कर नहीं देखता, उसका विवेक कैसे जगेगा? विवेक दूसरों की तरफ देखने से नहीं जगता, क्योंकि पहली तो बात यह हैः कि जो व्यक्ति अभी खुद को ही देखने में समर्थ नहीं है, वह दूसरों को देखने में कैसे समर्थ हो सकेगा। जो व्यक्ति अभी अपने ही संबंध में निर्णय नहीं ले सकता है, वह दूसरे के संबंध में निर्णय कैसे ले सकेगा। खुद के भीतर के प्राणों से भी जो परिचित नहीं हो सका है, वह दूसरे के बाहर से देखकर उसके भीतर से कैसे परिचित कैसे हो सकेगा। दूसरे के बाहर जो दिखाई पड़ रहा है, वह दूसरे का अंतः तल नहीं है। क्योंकि खुद हम अपने बाबत समझ लें, अपने बाबत हम अपने बाहर जो दिखला रहे हैं, वह क्या हमारा अंतःकरण है, वह क्या हमारा अंतःतल है, जिससे हम कह रहे हैं मैं तुम्हें प्रेम करता हूं, जिससे हम कर रहा हूं कि मैं तुम्हारा आदर करता हूं, क्या सच में हमारे भीतर भी वही भाव है, वही आदर और प्रेम है या कि हम धोखा दे रहे हैं या कि हम चारों तरफ एक पाखंड का व्यक्तित्व खड़ा कर रहे हैं, एक अभिनय कर रहे हैं। हमारे बाहर तो जो है, वह झूठा है, भीतर कुछ सच्चा है। लेकिन दूसरे के बाहर को हम सच्चा मानकर विचार करने लगते हैं और दूसरे के भीतर को तो हम देख नहीं सकते, झांक नहीं सकते। इसलिए दूसरे को जानने के

पहले खुद को जानना बहुत जरूरी है और बड़े मजे की बात है, दूसरे के संबंध में जानने की हमारी इतनी उत्सुकता क्यों हैं। दूसरों के दीवालों के छेद में से हम झांकने की कोशिश क्यों करते हैं? दूसरों के वस्त्र उठाकर देखने का हमारा प्रयोजन क्या है? कहीं ऐसा तो नहीं है कि अपने को देखने से बचने के लिए हम सब यह उपाय करते हो, ऐसा ही है। अपने को देखने से बचना चाहते हैं, इसलिए दूसरों को उखाड़ते हैं और देखते हैं। और अपने को देखने से क्यों बचना चाहते हैं, बहुत पीड़ा होगी अपने को देखने से, इसलिए अपने को तो कभी नहीं देखते, अपने बाबत तो एक भ्रम खड़ा कर लेते हैं कि हम ऐसे हैं और दूसरे को देखते हैं। और दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं निरंतर अपने चित्त में अपनी वाणी में अपने विचार में। क्यों? ताकि इस भांति हम खुद ऊंचे हो सके। जब हम सारी दुनिया को नीचा देखने लगते हैं, तो अनजाने खुद ऊंचे हो जाते हैं। जो आदमी सब लोगों की बुराई देखने लगता है, वह एक बात में निश्चिंत हो जाता है कि वह खुद बुरा नहीं है।

रमेश कुमार
प्रबंधक (वित्त)

एक प्रेरणा दायक कहानी

एक गांव में कुम्हार मिट्टी गुंध कर मिट्टी से भिन्न-भिन्न प्रकार के बर्तन बना कर अपने घर का गुजर- बसर करता था। एक दिन कुम्हार ने मिटटी से तम्बाकू पीने वाली चिलम बडी ही मेहनत और सुन्दरता से बनानी शुरू की। उसे आग में पकाने से पहले कुम्हार के दिमाग में न जाने क्या विचार आया, उसने उसी समय तम्बाकू पीने वाली चिलम तोडकर उसे मिट्टी में मिला दिया। उसके बाद वह सुराही बनाने लग गया। मिट्टी ने विनम्रता पूर्वक कुम्हार से पुछा कि आपने चिलम क्यों तोड दी। कुम्हार ने सरलता से कहा कि बस मेरे मन में विचार आया कि मैं चिलम के वजाय सुराही बना लूं। मिट्टी कुम्हार से बोली कि आपके बदले हुए विचार और फैसला बहुत ही सराहनीय है, अगर आप मुझे चिलम बनाते तो मै सारे समय तम्बाकु के साथ अंगारो में जलती रहती व तम्बाकू पीने वाला व्यक्ति भी अपने फेफडे जलाता रहता। साथ ही लोग उस व्यक्ति को बुरी नजर से देखते और मुझे भी बुरी नजर से देखते। अब मै सुराही बनकर हर समय ठन्डे पानी से भरी रहूगीं और मै हरपल ठन्डी रहुंगी, और जो भी इस शीतल जल को पीयेगा उसका मन भी शीतल रहेगा |लोग मुझे अच्छी नजर से देखेंगे व दुआएं देगें। इसलिए आपने जो अपने विचार बदले उसके लिए मै सदैव आपकी धन्यवादी रहूगीं।

इसका भावार्थ है कि इन्सान को जो भी फैसला लेना है सोच विचार करके लेना चाहिए ताकि किसी के मन को ठेस न पहुंचे किसी को दुखदायी न हो. आपका लिया गया फैसला किसी की जिन्दगी बना सकता है और किसी की जिन्दगी मिटा भी सकता है। इसलिए आपका जो विचार हैं वे आपके पास सुरक्षित है।

"बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताए".

अब्बल चन्द
ए.एफ (एस.जी)

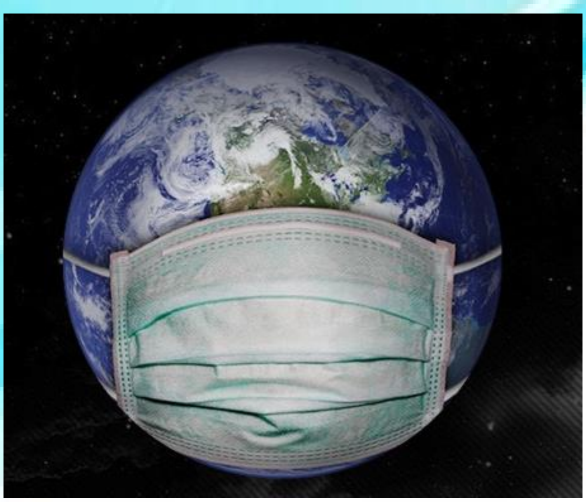

कोरोना से जंग, दिखाए कई रंग

जिंदगी गुज़र रही थी खुशगवार
वर्ष की शुरू हुई थी नई फुहार,

ऋतु दिखा रही थी अपनी बहार
खत्म हो गये थे सब त्यौहार,

तभी हुआ कोविड-19 महामारी का प्रहार
प्रतिदिन हुए जा रहे थे सैंकड़ों बीमार,

देख कर महामारी का बढ़ता प्रसार
शुरू हुआ लाक डाउन, दिन था रविवार,

लगाई गई सभी को सावधानी की गुहार
चाहे हो नौकरीपेशा यां हो दुकानदार,

घर में बैठ गए वो, जो थे समझदार
ना समझों ने कर दिया दूसरों का बंटाधार,

डॉक्टर और पुलिस की हो गई छुट्टीयां अस्वीकार
दूसरों की सुरक्षा के लिए हो गए मिलनसार,

निभाया फ़र्ज़ स्वास्थ्य कर्मियों ने बनकर सेवादार
सभी व्यक्त करते हैं दिल से उनका आभार,

छात्रों का बंद हुआ अध्यापकों से साक्षात्कार
अब पढ़ेंगे आन लाइन, इस पर हुआ विचार,

बुजुर्ग और बच्चों ने अन्दर रहना किया स्वीकार,
पती ने पत्नी संग किए नए-नए पकवान तैयार,

नौकरियां जाने से हुए श्रमिक लाचार
अपने घरों को पैदल चले फस गए बीच मझधार,

बस्तिओं के निवासी जब थे बिना आहार
समाज सेवियों ने निभाया बख़ूबी अपना किरदार,

मास्क पहनकर दूरी रखना है असरदार
दूसरों से मिलें तो करें हाथ जोड़कर नमस्कार,

महामारी की रोकथाम के लिए हो जाओ ख़बरदार
रखें ध्यान संपूर्ण अपना हो जाए सुखी संसार |

हरविन्दरपाल सिंह कैंथ
उप प्रबंधक - आई टी

दृष्टिकोण

सानवी गोयल सुपुत्री श्री आशीष गोयल, उप प्रबंधक (सचिव) की खूबसूरत पेंटिंग

दृष्टिकोण भविष्य के बारे में एक धारणा का वर्णन करता है जो यह निर्धारित करता है कि आप परिस्थितियों का आंकलन किस तरह करेंगे। यह एक स्वाभाविक या विशेष मानसिक रुझान है जो यह दर्शाता है कि आपका स्थितियों का विवेचन और प्रतिक्रिया कैसी होगी ।

निराशावादी लोग हर चीज़ में दुखी होने का कोई न कोई कारण तलाश लेते हैं । वे शिकायत करना कभी बंद नहीं कर सकते। उन्हें अपने आस पास के लोगों से, गतिविधियों से, परिस्थितियों आदि से हमेशा शिकायत रहती है । लेकिन निराशावाद के भी पैरोकार हैं। इस तथ्य के बावजूद कि सबसे खराब उम्मीद करना मनोवैज्ञानिक तौर पर बेहद दर्दनाक हो सकता है, निराशावादी, स्वभावतः निराशा से काफी प्रतिरक्षित रखते हैं।

आशावादी लोग ग्लास को आधा भरा देखते हैं। आपको अपने आस-पास बहुत से इस तरह के लोग मिल जाएँगे । संभवतः आप भी इनमें से एक हों। अनेकों लेख सकारात्मक होने पर जोर देते हैं और स्व-सहायक पुस्तकें सकारात्मक होने के गुर एवं लाभ के ज्ञान से भरी पड़ी हैं। सकारात्मक सोच के समर्थन में एक से एक अच्छी केस स्टडी और कहानियां हैं। आशावादी लोगों के बीच में रहने से खुद में भी सकारात्मकता बढती है। वे जीवन, घटनाओं और लोगों के सकारात्मक पहलुओं को देख पाने में सहायक होते हैं। वे संभावित आपदाओं, मुश्किलों को नज़रअन्दाज़ कर, हर परिस्थिति में सकारात्मक पक्ष को देख आगे बढ़ने में विश्वास करते हैं। सकारात्मक होने में कुछ भी गलत नहीं है सिवाय इस बात के कि अधिकांश बार सच्चाई को समझने और स्वीकार करने की अनदेखी हो जाती है।

आशावादी लोग कभी-कभी अपने अंध विश्वास में वास्तविकता को देखने में असफल हो जाते हैं। चाहे वे स्वयं के गिरते स्वास्थ्य या व्यावसायिक नुकसान आदि के लक्षण हों, अक्सर वे लक्षणों को अनदेखा कर अपने ही काल्पनिक लोक में लीन रहते हैं ।

आज की कार्यकारी प्रस्तुतियाँ और वार्षिक रिपोर्ट अधिकतर केवल आशावादी दृष्टिकोण दर्शाती हैं। निवेशकों और बाजार की प्रतिक्रिया के डर से अधिकतर रिपोर्ट, वित्तीय स्थिति, परियोजना की स्थिति के वास्तविक दृष्टिकोण को दर्शाने में विफल रहती हैं।

सकारात्मक और आशावादी होने में कोई बुराई नहीं है, परन्तु सच्चाई को स्वीकार करना और संशोधित सुधारात्मक योजना से काम करना महत्वपूर्ण है। वास्तविकता को स्वीकार करना निराशावादी नहीं है, यह आपको आगे बढ़ने, सुधार करने और योजनाबद्ध संशोधित कार्रवाई करने की राह दिखाता है। हममें अपनी गलतियों को स्वीकारने का साहस होना चाहिए क्योंकि असफलता ही सफलता की सीढ़ी है ।

व्यावहारिक लोग वे होते हैं जो आशावादी होते हैं लेकिन नकारात्मक खबरों को पेश करने से कतराते नहीं। वे अपनी क़ाबलियत के दम पर, केवल बुरी खबर देने की बजाय, अपरंपरागत तरीकों व प्रगतिशील विचारों द्वारा उनके समाधान भी तैयार रखते हैं। व्यावहारिक लोग जोखिम और प्रतिफल का मूल्यांकन कर, उचित समय पर निर्णय लेते हैं। वे असफलता पर रुक नहीं जाते बल्कि अपनी असफलता से उबरने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं और दुगने जोश से नई ऊंचाइयां छूते हैं।

आज हमें इस दुनिया को बेहतर बनाने के लिए अधिक व्यावहारिक लोगों की आवश्यकता है।

भावना
प्रबंधक (सचि०)

कभी हंस भी लिया करो

पत्नी हाथ हाथ में बेलन लेकर पति से पुछती है ,दो खाओगे के तीन ।

पतिः रोटी बोला करो साथ में, कन्फयुजन हो जाती है ।

पति- सब्जी में नमक नही है आज

पत्नी-वो क्या है ना, आज सब्जी थोडी जल गई थी

पति- तो सब्जी मे नमक क्यो नही डाला........

पत्नी- मां ने कहा था कि जले पर नमक नहीं छिडकना चाहिए.....

पुरानी कहावत है : अकेले आए थे और अकेले जाना है ।

2021 की कहावत है : अकेले आए है और जितने भी संपर्क में आंएगे ....

सभी को साथ ले जाना है ।

बलविंदर कुमार,
सहा० प्रबंधक (प्रशा०)

रमणीय गोवा

मै अपने परिवार सहित वर्ष 2019 में अपनी शादी की 25 वीं वर्षगांठ पर गोवा की यात्रा पर गया । हम दिल्ली तक अपनी गाडी से गये और आईजीआई टर्मिनल-3 पहुंचे यहां से हमे इंडिगो की फलाईट पकडनी थी। गेट पर टिकट व आईडी दिखाया गया जिसमे आधार कार्ड सबसे मान्य है आधार से ही हमारी शक्लें मिलाई जा रहीं थी फिर हम अन्दर चले गये तथा इंडिगों के काउंटर पर लग गये जहां पर हमारा सारा सामान रखवा लिया गया थोडी देर बाद अनाउंस हुआ की गोवा जाने वाली फलाईट तैयार है। इंडिगो की बस हमें फलाईट तक लेकर गई फिर हम फलाईट में अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गये।केबिन क्रू द्वारा सेफ्टी नियमों का प्रदर्शन रूटीन तौर पर किया गया तथा प्लेन टेक आफ की तैयारी में रनवे पर दौडने के लिये कमर कस चुका था थोडी देर बाद प्लेन टेक आफ कर गया तथा हम बादलों के बीच पहुंच गये । हमे थोडा डर भी लग रहा था क्योंकि हम पहली बार फलाईट में बैठे थे यह हमारा पहला अनुभव था।बच्चों ने प्लेन में सैंडविच, बर्गर का लुत्फ उठाया।ढाई घंटे बाद अनाउंस हुआ कि हम गोवा एयर पोर्ट पर उतरने वाले हैं, कृपया सीट बेल्ट बांध लें और हमारा प्लेन लैंड कर गया। एयरपोर्ट से बाहर निकलने पर हमने होटल के लिये एक टैक्सी किराये पर ली तथा हमने ड्राईवर से गोवा के बारे में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने हमें बहुत अच्छी जानकारियां दी।हमारा होटल कैलुन्गट बीच के बिल्कुल पास था जिसमें हम 4 रात और 5 दिन ठहरे जिसकी बुकिंग हमने पहले ही करवा ली थी।कहा जाता है कि गोवा रमणीय समुद्र तटों के लिए अत्यंत मशहूर है यहां का माहौल बहुत ही अपना सा महसूस कराता है यहां पर आपको हर उम्र के लोग दिखाई देंगे। यहां पर हमेशा देश-विदेशों के पर्यटकों की भारी भीड़ रहती है।आप गोवा में कहीं भी घूमों किसी भी प्रकार का डर नहीं लगेगा। यहां के लोग बहुत ही ईमानदार हैं।

सुबह होते ही हम कैलुनगुट बीच पर पहुंच गये जहां पर खुले आसमान के नीचे जहां तक नजर जाती, बस पानी ही पानी था। ऐसा लग रहा था जैसे विशाल समुद्र बाहें फैलाकर हमारा स्वागत कर रहा हो।हमने समुद्र भी पहली बार ही देखा था उसके बाद हम समुद्र की लहरों के बीच चले गये हमे थोडा डर भी लग रहा था क्योंकि यह हमारा पहला अनुभव था जब लहरे हमें छूकर वापिस लौट रहीं थी तो मानो हमारी थकान को मिटाते हुये हमारे अन्दर एक नया उत्साह भर रही हो।मेरे एक बेटे ने वहां पर पैराग्लाइडिंग का भी आनंद लिया जोकि इसे करने कि लिये काफी उत्साहित था उसने बताया कि जमीन से 70-80 मीटर की ऊंचाई पर उन्हें एक पैराशूट से लटका दिया।दूर-दूर तक बस पानी ही पानी था। इसके अतिरिक्त मैने, मेरी पत्नी तथा मेरे एक सुपुत्र ने वाटर स्कूटर चलाकर आनंद लिया जोकि पानी को चीरता हुआ लहरों के ऊपर से उछालता हुआ तेजी से आगे बढता चला जाता है इसमें थोडा डर भी लगता है।बीच के पास काफी सारी झोपड़ियाँ भी बनी हुई हैं यहां रात का नजारा ही कुछ और होता

है।यहाँ का नए साल का उत्सव विश्वभर में मशहूर है। इस समय विभिन्न जगहों से लोग क्रिसमस व नए साल के लिए छुटियाँ लेकर आते है।

गोवा में छोटे-बडे क्रूज भी चलते हैं। एक दिन हमने इसका पूरा आनन्द लिया।इसमे कई फ्लोर बनी होती हैं इसमें सबसे ऊपर वाले फ्लोर पर खडे होकर समुद्र का नजारा देख सकते हैं बीच वाले फ्लोर पर बैठने की व्यवस्था होती है इसमें डिस्को थैक भी होता है।इस तरह क्रूज लोगों के मनोरंजन करने का रोमांचकारी साधन है जिसमें आप गाने और खाने का आनंद उठा सकते हैं जिस क्रूज में हम सवार थे उसका एक आदमी का टिकट लगभग 1500/- रू था इसमें आपको खाना पीना, बीयर आदि सब फ्री है ।

गोवा में आपको वेज और नानवेज दोनों तरह का खाना मिलता है तथा यहां की फेनी के नाम से शराब काफी मशहूर है। गोवा में अगुआडा किला बहुत प्रसिद्ध है पुर्तगालियों द्वारा अगुआडा किले का निर्माण 17वीं शताब्दी में किया था। यह गोवा के पर्यटन स्थल में से बेहद आकर्षक स्थान है, जहाँ लोग लगभग हर मौसम में आना पसंद करते है। यह जगह अपनी खूबसूरती की वजह से काफी मशहूर है।

गोवा में नारियल की फसल बडे पैमाने पर होती है यूं तो नारियल पर जगह मिलता है, पर गोवा नारियल पानी की बात ही निराली है। हमने यहां पर नारियल पानी भी पीया, यह मिठास भरा होता है।यहां के लोगों की जीविका का नारियल भी एक प्रमुख साधन है ।
गोवा में काजू भी काफी सस्ता मिल जाता है क्योंकि गोवा में काजू की खेती की जाती है । यहां पर आपको काजू की दुकानें जगह-जगह मिल जायेंगी और हम भी गोवा से काफी काजू खरीद कर लाये जोकि अपने सगे संबंधियों में बांटे गये।

गोवा में किराये के लिये मोटर साईकल, स्कूटर व कार हर दुकान के आगे खडी मिलेंगी। हमने भी एक दिन थार गाडी किराये पर ली और हमने पूरा दिन साउथ गोवा का नजारा देखा।यदि आप शांति के कुछ पल बिताना चाहते हो तो ओल्ड गोवा स्थित चर्च में जाईये क्योंकि यह काफी मशहूर चर्च है और यह गोवा का सबसे प्राचीन चर्च है जहां पर सभी पर्यटक दर्शन करने जाते हैं। हम वहां पर मंगेशी मंदिर भी गये जहां पर जाकर मन को बडी शांति प्राप्त हुई ।

गोवा की जीवनशैली ने हमें बहुत ही प्रभावित किया।हमने वहां पर पूरे-पूरे दिन का लुत्फ उठाया।वहां से हम बहुत सी यादों को अपने साथ लेकर आये।सच में वो नारियल पानी की मिठास, समुद्र की लहरों की वो आवाज आज भी कानों में गूंजती है।एक बार तो मन कह उठता है कि मीठी यादों का ये सिलसिला इस झरोखे में यूं ही तरोताजा बना रहे ।

निर्मल सिंह
उप प्रबंधक (सचिव-राजभाषा)

मेरी मसरूर यात्रा

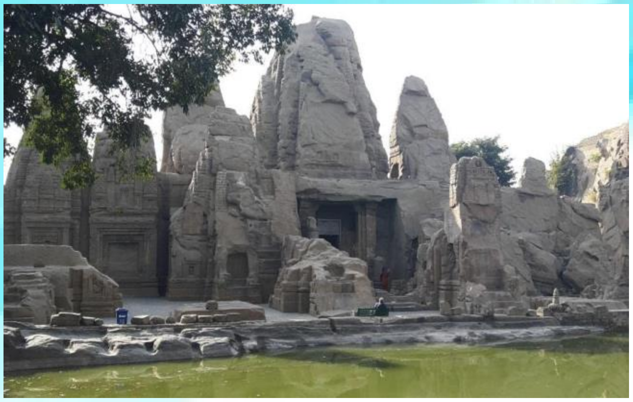

कुछ चार वर्ष पहले मुझे सपरिवार धर्मशाला जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ | धर्मशाला के लोकल टूरिस्ट स्थल देखने के बाद सोचा के आस-पास भी कुछ भ्रमण कर लिया जाए | मैंने धर्मशाला के पास रॉक कट मंदिरों के बारे में पहले कहीं पढ़ा था कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा ये मंदिर संरक्षित स्मारक माने गए हैं ,लेकिन रिसोर्ट में किसी को भी इस मंदिर के बारे में पता न था | यहाँ तक की रिसोर्ट की प्लेसेस टू विजिट गाइड में भी कोई जानकारी उपलब्ध न थी | गूगल मैप्स पर ढूँढने से पता चला कि यह जगह लगभग 42 km और डेढ़ घंटे की दूरी पर है | पहाड़ी रास्ते में अनजाने रास्ते पर स्वयं कार चलाने का खतरा होने के बावजूद भी पतिदेव ने इस जगह पर जाने के लिए मान लिया और बच्चों को भी मना लिया | मन में सोचा कि मसरूर में घूमने के बाद दोपहर का खाना खाकर काँगड़ा में किला देखते हुए रिसोर्ट वापिस आ जायेंगे | बढ़िया नाश्ते के बाद लगभग 11 बजे हम मसरूर के लिए चल पड़े और माशाअल्लाह अब शुरू हुई गूगल मैप्स पर मोबाइल डाटा और रोमिंग नेटवर्क के सहारे हमारी मसरूर यात्रा |

जैसे ही हम धर्मशाला से बाहर निकले ; कार में लगा जी.पी.एस नेटवर्क कमजोर पड़ने लगा और रास्ता बताने में आना-कानी करने लगा | फिर मोबाइल पर लोकेशन लगा कर ड्राइव करने लगे | शुक्र है कि पहाड़ों में रास्ते में परिवर्तन काफी कम होता है | लेकिन नयी जगह एवं अनजाना रास्ता होने का थोडा सा डर मन में अभी भी था | रस्ते में चढ़ाई उतराई तो कम थी पर घुमाव काफी अधिक थे | सोचा कि सड़क पर कोई व्यक्ति दिखे तो कन्फर्म कर लेंगे कि हम सही रास्ते पर जा रहे हैं | पर हमारी किस्मत सड़क पर न कोई बंदा, न बन्दे की जात | विचलित मन को शांत करने के लिए संगीत का सहारा लेने का सोचा तो बच्चों ने आपस में लड़ कर रही-सही कसर पूरी कर दी |एक को फ़ास्ट पंजाबी नंबर चाहिए थे और एक को स्लो इंग्लिश नंबर| लेकिन मुझे और पतिदेव को तो किसी माइलस्टोन कि तलाश थी जिसमे लिखा हो कि वह रास्ता मसरूर को जाता है | लगभग एक सवा घंटे की ड्राइव के बाद कुछ कॉलेज स्टूडेंट्स टाइप के लड़के व लड़कियां दिखे |परेशान मन कि आस बंधी,उनसे पूछा पर उन्हें इस मंदिर की कोई जानकारी न थी | एक बार फिर गूगल बाबा पर भरोसा करते हुए और ऊपर वाले को याद करते हुए हम अपने तय रस्ते पर चलते गए | गूगल मैप्स के अनुसार अब केवल 15 मिनट का सफ़र बाकी था और ये 15 मिनट तो सबसे लम्बे 15 मिनट थे | बच्चे लड़ कर और मैं नेविगेट कर के थक चुके थे | अब तो बस मंदिर के आने का इन्तेजार था | लेकिन ये क्या? गूगल मैप्स ने कहा you

have arrived पर वहां तो कुछ भी नहीं था | सड़क पर केवल एक के ऊपर एक तीन बड़े पत्थर पड़े थे | ये देखते ही बच्चे और पति देव ठहाका मार कर हंसने लगे | और कहा " लो जी यह हैं प्रिय माताश्री के रॉक कट मंदिर !!!! यह देखने इतनी दूर हम आए हैं !!!!"

मैंने सोचा और कुछ संयित होते हुए कहा कि मंदिर सड़क पर नहीं होगा | किसी पहाड़ पर होना चाहिए | पतिदेव ने भी समर्थन किया पर प्रश्न ये था कि कौन से पहाड़ पर और ये बात अब किस से पूछी जाए ? आस पास न तो कोई व्यक्ति दिख रहा था न ही कोई ऊंचा पहाड़ | एक बार तो मन किया कि वापस चला जाए पर सोचा कि चलो ड्राइव का ही मजा लेते हैं शायद कुछ ब्रेक थ्रू ही मिल जाए | और एक बार फिर हम आगे बढ़ने लगे | कुछ दूरी तक ड्राइव के बाद दो रास्ते वाला जंक्शन था और शायद भगवान ने हमारी सुन ली थी जोकि यहाँ पर हमें एक सज्जन भी दिखाई पड़े | उन्होंने बताया कि लेफ्ट जाती सडक पर जाना है और वहां कुछ चढ़ाई के बाद पार्किंग मिलेगी | फिर मंदिर पहुँचने के लिए पहाड़ पर पैदल चढ़ना होगा | बस फिर क्या था | एक नए जोश के साथ हम आगे बढ़ चले | पार्किंग में गाड़ी पार्क की , टिकट लिया और लगभग 5-7 मिनट चलने के बाद मसरूर के रॉक कट मंदिर के अदभुत दृश्य ने हमारा स्वागत किया |

तो लीजिये अब हम करते हैं इस मंदिर की बात |

मसरूर मंदिर उत्तर भारत के पहाड़ी राज्य कांगड़ा शहर से 35 किलोमीटर पश्चिम में और धर्मशाला-मैकलॉड गंज से लगभग 45 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में हैं। मंदिर हिमालय की तलहटी में ब्यास नदी घाटी में बना है और धौलाधार पर्वत की बर्फीली चोटियों के सामने है| मसरूर असामान्य रूप से दर्शनीय है क्योंकि इसे भारत में पवित्र हिमालय के एक पहाड़ से उकेरा गया है। गूगल के अनुसार मसरूर के हिंदू मंदिर की मुंबई के पास एलीफेंटा गुफाओं (1,900 किमी दूर), कंबोडिया में अंगकोर वाट (4,000 किमी दूर) और तमिलनाडु के महाबलिपुरम (2,700 किमी दूर) के रॉक-कट मंदिरों से समानता दिखती हैं।

पहली नजर में मसरूर मंदिर में मुख्य संरचना बहुत से मंदिरों का परिसर प्रतीत होता है, लेकिन यह एक एकीकृत संरचना है जिसके केंद्र में एक प्रमुख मंदिर है | अधिकांश हिंदू मंदिरों के विपरीत इसका प्रवेश पूर्व की ओर नहीं हैं बल्कि पूर्वोत्तर में स्थित धौलाधार पर्वत की बर्फीली हिमालय की चोटियों की ओर से है।मंदिर के परिसर को प्राकृतिक सैंड स्टोन की चट्टान से उकेरा गया है। इसे पत्थरों से नहीं बनाया गया लेकिन चट्टान को काटकर और पहाड़ों को अंदर से खोखला करके सही आकार और आंतरिक खाली जगह बनाए गए हैं। मंदिरों के शिखर को एक अखंड चट्टान से उकेरा गया है | मंदिर मुख्य गर्भगृह में चार प्रवेश द्वार हैं, जिनमें से एक पूर्व की ओर है और पूरा है | दो उत्तर और दक्षिण की तरफ वाले द्वार आंशिक रूप से पूर्ण हैं और चौथा द्वार काफी हद तक अधूरा है। परिसर का मुख्य

गर्भगृह अन्य मंदिरों और मंडप की भांति चौकोर है। एक समय में मुख्य मंदिर में 13 शिखर थे जो सभी चट्टान से रूप से निकलते हुए दिखाई देते थे। हिंदू मंदिरों के वास्तुकला ग्रंथों अनुसार मंदिर परिसर में पूर्व की ओर एक पवित्र जल कुंड है जिसका निर्माण 8 वीं शताब्दी की शुरुआत में किया गया प्रतीत होता है | मंडप से पानी को प्राकृतिक रूप से निकालने के लिए एक जल निकासी प्रणाली थी। पूर्वी प्रवेश द्वार में एक बड़ा मंडप और एक पोर्टिको था लेकिन यह 1905 में आए भूकंप में नष्ट हो गया था | अब केवल फर्श और एक स्तंभ के अवशेष बचे हैं।

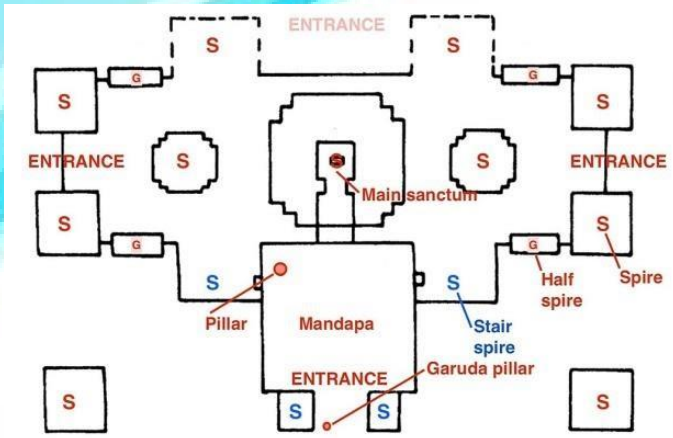

हालांकि मंदिरों की खुदाई अज्ञात कारणों से पूरी नहीं हो सकी परन्तु एक कारण "मदर रॉक" की बनावट में दोष भी हो सकता है | कुछ स्थानों पर चट्टान प्राकृतिक रूप से बहुत कठोर है जिसे तराशना मुश्किल रहा होगा | शायद यही कारण है कि इस पर जटिल नक्काशी 1,000 वर्षों से भी अधिक संरक्षित रह पायी है।

मसरूर रॉक-कट मंदिर भारत में प्रारंभिक रॉक-कट परंपराओं को दर्शाते हैं। मूर्तियों में गुप्तकालीन परंपराओं को देखा जा सकता हैं | संभवतः मसरूर मंदिर परिसर को पंजाब के प्राचीन जलंधर राज्य के एक सर्वोपरि शासक या कन्नौज के राजा यशोवर्मन के वर्चस्व के तहत कटोच शासक द्वारा बनाया गया था। मंदिर परिसर को अब ठाकुरद्वार के रूप में जाना जाता है, क्योंकि अब यहाँ भगवान राम, लक्ष्मण और सीता की पत्थर की छवि को स्थापित किया गया है |हालांकि इन मंदिरों को 1905 के कांगड़ा भूकंप से व्यापक नुकसान हुआ था लेकिन उनकी एकीकृत योजना से यह प्रतीत होता है कि मंदिरों को सभी कार्डिनल दिशाओं से सुलभ योजना का पालन करना था। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने पुरातात्विक मूल्य के मद्देनजर 1913 में मंदिर परिसर को राष्ट्रीय महत्व का संरक्षित स्मारक घोषित किया है।

अंत में परिसर में स्थित एक छोटे से खोखे से चाय बिस्कुट का नाश्ता खाने के बाद और इस भव्य दृश्य को मन में बसा कर हमने मंदिर परिसर से विदा ली | उस समय मेरे मन में यह विचार आया था कि मैं इस अविस्मरणीय यात्रा को शब्दों का रूप देने का अवश्य प्रयत्न करूंगी | आज यह सपना पूर्ण हुआ है|

हरजोत कौर,
संयुक्त महाप्रबन्धक(परि०)

बच्चों की कलम से

कोरोना में पढ़ाई

जैसा कि हम जानते हैं कि इस महामारी के दौरान सभी छात्र ऑनलाइन अध्ययन कर रहे हैं, इसके कई लाभ हैं और कई नुकसान भी हैं। आइए उन पर गौर करें। छात्र कंप्यूटर में विशेषज्ञ हो रहे हैं क्योंकि उन्होंने सीखा है कि वीडियो कॉल कैसे शुरू करें, पीडीएफ कैसे बनाएं और भेजें आदि। छात्र कक्षा शुरू होने से पहले ही जागते है और अटेंड करते है तथा किसी भी समय जा सकते हैं यह एक फायदा है और साथ ही एक नुकसान भी है। छात्र यात्रा में समय की बचत कर रहे हैं और इसलिए यह समय पढ़ाई और सुधार में दे सकते हैं। छात्र जिस विषय में रुचि रखते हैं, उसके बारे में कई वीडियो देख सकते हैं। कई शिक्षकों ने यह भी सीखा कि ज़ूम, गूगल मीट, पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन आदि जैसे कई कार्यों को कैसे संचालित किया जाता है। छात्रों के लेखन भाग पर कम बोझ है। प्रतिकूल प्रभाव पर ध्यान दें तो छात्र जहाँ प्रौद्योगिकी में सुधार कर रहे हैं, वही अधिकांश समय इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में बिता रहे हैं जो उनके स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहे हैं। कई छात्रों को चश्मा मिला और यह छात्रों को बाहरी खेलों पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति नहीं देता है और उनकी ऊँचाई, सहनशक्ति, हड्डियों आदि को प्रभावित करता है, अधिकांश छात्र कक्षा शुरू होने से ठीक पहले उठते हैं, इससे उन्हें अच्छी नींद आती है लेकिन यह उनकी नियमित और स्वस्थ दिनचर्या को परेशान करता है और वे कक्षा के दौरान अपना नाश्ता और कई कामकाज करते हैं और यह उन्हें पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित नहीं करने देता। इंटरनेट ट्रैफ़िक में वृद्धि हुई है और शिक्षकों और छात्रों के पक्ष में और उनकी पढ़ाई को प्रभावित करने वाले कई इंटरनेट मुद्दे हैं। राइटिंग पार्ट कम है, लेकिन यह उनके लेखन कौशल को खराब कर रहा है और उनकी वर्तनी और लिखावट को खराब कर रहा है। ऑनलाइन परीक्षा के दौरान वे बिल्कुल भी अध्ययन नहीं करते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि वे पुस्तक से अपने उत्तर की जांच कर सकते हैं जो वास्तव में सही नहीं है। ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान कई फायदे और नुकसान हैं लेकिन आशा है कि जल्द ही सब कुछ ठीक हो जाएगा और हम अपनी सामान्य दिनचर्या में लौट सकेंगे।

इकजोत सिंह,

सुपुत्र श्रीमती मनमीत कौर, सहा० प्रबंधक(वित्त)

पुस्तकें

एक पुस्तक लेखन के रूप में जानकारी का एक रिकॉर्ड है। किताबें हमारी सबसे अच्छी दोस्त हैं। वे ज्ञान और सूचना का सबसे अच्छा स्रोत हैं। वे हमारे चरित्र के निर्माण में हमारी मदद करते हैं। वे हमें अपने जीवन में नया पाठ पढ़ाते हैं। पुस्तक हमारे जीवन की तरह एक नया दिन है जैसे ही आप एक नया पृष्ठ बदलते हैं। कुछ कॉमेडी पुस्तकें हमें हमारे जीवन में खुशी और जानकारी प्रदान करती हैं। हमें जीवन को सही तरीके हँसते खेलते जीने का अंदाज़ सिखाती हैं |

प्रभनूर कौर

सुपुत्री श्रीमती मनमीत कौर, सहायक प्रबंधक

हम होंगे कामयाब

धोते-धोते नमस्ते सीखो,
नमस्ते से मिलना |

सफाई रखी हमने,
उतना भागे कोरोना |

घर बैठे-बैठे थक गए हम तो,
सेंट जोसेफ कब खुलना |

बस करो अब तो,
स्कूल जाकर है सबसे मिलना |

धोते-धोते नमस्ते सीखो,
नमस्ते से मिलना |

मनमोहित सिंह,
सुपुत्र श्री हरविन्दर पाल सिंह, उप प्रबंधक –आई टी

स्वच्छ भारत

हम सबका बस एक है सपना,
भारत को स्वच्छ बनाना है ।
यह सपना अब सच करना है,
देश को स्वर्ग बनाना है।

बच्चे बूढ़े युवा को,
मिलकर आगे आना है,
भारत कैसे स्वच्छ बनेगा,
सब को यह समझाना है।

बाग़ बगीचे साफ रखें सब,
सड़के साफ रखें सारी ।
गली मोहल्ले साफ रखें सब,
नदिया साफ रखें सारी।

मोहक वत्स
सुपुत्र श्री गौरव शर्मा, उप प्रबंधक (प्रशा०)

मोहक वत्स सुपुत्र श्री गौरव शर्मा, उप प्रबंधक (प्रशा०) की खूबसूरत पेंटिंग

मोहक वत्स सुपुत्र श्री गौरव शर्मा, उप प्रबंधक (प्रशा०) की खूबसूरत पेंटिंग

चण्डीगढ़ क्षेत्रीय कार्यालय में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की झलक

सबके लिए किफायती आवास का केन्द्र बिन्दु

hudco

सतत् पर्यावास विकास की प्रोन्नति के लिए प्रतिबद्ध

राष्ट्र के सपनों को साकार करने तथा जीवन गुणवत्ता को प्रोन्नत करके राष्ट्र निर्माण में सहभागिता के लिए प्रतिबद्ध

देश में **'सामाजिक न्याय के साथ लाभप्रदता'** के संकल्प वाले मिनी रत्न सीपीएसई और एक अग्रणी टैक्नो-फाइनैंसियल संस्थान के रूप में स्थापित हडको, किफायती आवास में देश का अग्रणी होने के साथ-साथ सतत विकास में भी अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभा रहा है। हडको आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों तथा कम आय वाले समूहों के लिए हाउसिंग हेतु 'प्रधानमंत्री आवास योजना - **सबके लिए आवास** के अंतर्गत क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी स्कीम (सीएलएसएस) के लिए केन्द्रीय नोडल एजेंसी के रूप में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है।

स्फूर्तिदायक मूलसंरचना • आवास विकास को बढ़ावा देना • प्रशिक्षित जनशक्ति • सीएसआर के लिए प्रतिबद्ध

हडको

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लि.
(भारत सरकार का उपक्रम)
कोर 7-ए, इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली 110003
CIN: L74899DL1970GOI005276, GST No. 07AACH0632A1ZF
www.hudco.org